हिंदी सुलभभारती

सातवीं कक्षा

भाषा विषयक क्षमता

यह अपेक्षा है कि सातवीं कक्षा के अंत में विद्‌यार्थियों में भाषा विषयक निम्नलिखित क्षमताएँ विकसित हों ।

क्षेत्र	क्षमता
श्रवण	१. कविता, गीत, चुटकुले, कहानी, भाषण आदि एकाग्रता के साथ सुनना/सुनाना । २. आकाशवाणी आदि के शिक्षाप्रद कार्यक्रमों को आकलन करते हुए रुचिपूर्वक सुनना । ३. अनौपचारिक/औपचारिक संवाद, पत्र आदि को अंतरसहित आकलन करते हुए सुनना । ४. आसपास के सार्वजनिक स्थलों की सूचनाओं को ध्यानपूर्वक सुनकर उनका पालन करना । ५. स्वर, व्यंजन और सौ तक के अंकों का आकलन करते हुए उच्चारण सुनना । ६. सुनी हुई बातों पर चिकित्सक विचार (सत्य-असत्य, तार्किक-अतार्किक) करते हुए सुनना । ७. किसी प्रस्तुति के बारे में अपने निरीक्षण/अनुभव/पूर्वज्ञान के आधार पर सत्यापन करते हुए सुनना ।
भाषण-संभाषण	१. गीत, कविता, कहानी, संवाद, एकांकी आदि की मुखर एवं साभिनय प्रस्तुति । २. कार्यक्रमों तथा अपने गाँव-शहर, तहसील-जिला के प्रमुख स्थलों की जानकारी देना । ३. मुहावरे, कहावतेंयुक्त प्रसंग, घटना, छोटी कहानी अपने शब्दों में बताना । ४. विशेष ध्वनियों को समझकर भाषण-संभाषण में उनका उपयोग करते हुए बातचीत करना । ५. प्रश्नों के उचित उत्तर देते समय दिशा निर्देश करते हुए किसी संदर्भ को अपने शब्दों में पुनः प्रस्तुत करना । ६. जोड़ी/गुट में कृति/उपक्रम के रूप में संवाद, चुटकुले, नाटक में सहभागी होकर प्रभावपूर्ण प्रस्तुति करना । ७. औपचारिक अवसरों पर संक्षिप्त भाषण तैयार करके वक्तव्य देना ।
वाचन	१. कविता, गीत, कहानी, एकांकी आदि का हाव-भाव, लय-ताल के साथ आदर्श वाचन कराना । २. सूचना पट, विविध पोस्टर, चार्ट, पत्र आदि को समझते हुए मुखर, मौन वाचन करना । ३. घटना, प्रसंग, त्योहार आदि की उपलब्ध सामग्री का एकत्रीकरण करते हुए वाचन करना । ४. संचार माध्यमों की सूचना, औपचारिक/अनौपचारिक पत्र, आवेदन पत्र, प्रपत्र, व्यक्तिगत नोट, डायरी, निबंध, ब्लॉग आदि का आकलन सहित वाचन करना । ५. बिना क्रम के सौ तक के अंकों, अक्षरों और सांकेतिक चिह्नों का आकलनसहित वाचन करना ।
लेखन	१. पठित सामग्री का आकलनसहित शुद्‌धलेखन करना । २. विराम एवं कारक चिह्नयुक्त लघु परिच्छेद में अपने भावों-विचारों का लेखन करना । ३. दो-तीन वाक्यों का आकलनसहित लिप्यंतरण एवं अनुवाद करके लेखन करना । ४. पठित/अपठित सामग्री पर आधारित प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिखना । ५. दिए गए नियत विषयों पर स्वयं प्रेरणा से लेखन करना ।

कृपया शेष भाग अंतिम पृष्ठ पर देखें ।

शासन निर्णय क्रमांक : अभ्यास-२११६/(प्र.क्र.४३/१६) एसडी-४ दिनांक २५.४.२०१६ के अनुसार समन्वय समिति का गठन किया गया । दि. ३.३.२०१७ को हुई इस समिति की बैठक में यह पाठ्यपुस्तक निर्धारित करने हेतु मान्यता प्रदान की गई ।

मेरा नाम ________________ है ।

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे

संलग्न 'क्यू आर कोड' तथा इस पुस्तक में अन्य स्थानों पर दिए गए 'क्यू आर कोड' स्मार्ट फोन का प्रयोग कर स्कैन कर सकते हैं । स्कैन करने के उपरांत आपको इस पाठ्यपुस्तक के अध्ययन-अध्यापन के लिए उपयुक्त लिंक/लिंक्स (URL) प्राप्त होंगी ।

प्रथमावृत्ति : २०१७

© महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे - ४११००४
इस पुस्तक का सर्वाधिकार महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के अधीन सुरक्षित है। इस पुस्तक का कोई भी भाग महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के संचालक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता।

हिंदी भाषा समिति

डॉ.हेमचंद्र वैद्य - अध्यक्ष
डॉ.छाया पाटील - सदस्य
प्रा.मैनोद्दीन मुल्ला - सदस्य
डॉ.दयानंद तिवारी - सदस्य
श्री संतोष धोत्रे - सदस्य
डॉ.सुनिल कुलकर्णी - सदस्य
श्रीमती सीमा कांबळे - सदस्य
डॉ.अलका पोतदार - सदस्य - सचिव

हिंदी भाषा अभ्यासगट

श्री रामहित यादव
सौ. वृंदा कुलकर्णी
डॉ. वर्षा पुनवटकर
श्रीमती माया कोथळीकर
डॉ. आशा वी. मिश्रा
श्रीमती मीना एस. अग्रवाल
श्रीमती पूर्णिमा पांडेय
श्रीमती भारती श्रीवास्तव
श्री प्रकाश बोकील
श्री रामदास काटे
श्री सुधाकर गावंडे
डॉ.शैला चव्हाण
श्रीमती शारदा बियानी
श्री नरसिंह जेवे
श्रीमती गीता जोशी
श्रीमती अर्चना भुसकुटे
डॉ. रत्ना चौधरी
श्री सुमंत दळवी
डॉ. बंडोपंत पाटील
श्रीमती रंजना पिंगळे
श्रीमती रजनी म्हैसाळकर
श्रीमती निशा बाहेकर
डॉ. शोभा बेलखोडे
श्रीमती रचना कोलते
श्री रविंद्र बागव
श्री काकासाहेब वाळुंजकर
श्री सुभाष वाघ

प्रकाशक :
श्री विवेक उत्तम गोसावी
नियंत्रक
पाठ्यपुस्तक निर्मिती मंडळ
प्रभादेवी, मुंबई-२५

संयोजन :
डॉ.अलका पोतदार, विशेषाधिकारी हिंदी भाषा, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे
सौ. संध्या विनय उपासनी, विषय सहायक हिंदी भाषा, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे

मुखपृष्ठ और चित्रांकन : मयूरा डफळ

निर्मिति :
श्री सच्चितानंद आफळे, मुख्य निर्मिति अधिकारी
श्री संदीप आजगांवकर, निर्मिति अधिकारी

अक्षरांकन : भाषा विभाग,पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे
कागज : ७० जीएसएम, क्रीमवोव
मुद्रणादेश : N/PB/2017-18/QTY. 1.00
मुद्रक : M/s Akshay Offset, Islampur

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, **भारत के लोग,** भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता
और अखंडता सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) **को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं ।**

राष्ट्रगीत

जनगणमन – अधिनायक जय हे
भारत – भाग्यविधाता ।
पंजाब, सिंधु, गुजरात, मराठा,
द्राविड, उत्कल, बंग,
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल जलधितरंग,
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिस मागे,
गाहे तव जयगाथा,
जनगण मंगलदायक जय हे,
भारत – भाग्यविधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे ।।

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है । सभी भारतीय मेरे भाई–बहन हैं ।

मुझे अपने देश से प्यार है । अपने देश की समृद्ध तथा विविधताओं से विभूषित परंपराओं पर मुझे गर्व है ।

मैं हमेशा प्रयत्न करूँगा/करूँगी कि उन परंपराओं का सफल अनुयायी बनने की क्षमता मुझे प्राप्त हो ।

मैं अपने माता–पिता, गुरुजनों और बड़ों का सम्मान करूँगा/करूँगी और हर एक से सौजन्यपूर्ण व्यवहार करूँगा/करूँगी ।

मैं प्रतिज्ञा करता/करती हूँ कि मैं अपने देश और अपने देशवासियों के प्रति निष्ठा रखूँगा/रखूँगी । उनकी भलाई और समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है ।

प्रस्तावना

प्रिय विद्‌यार्थियो,

तुम सब पाँचवीं तथा छठी कक्षा की हिंदी सुलभभारती पाठ्‌यपुस्तक से परिचित हो और अब सातवीं हिंदी सुलभभारती पढ़ने के लिए उत्सुक होंगे । रंगीन चित्रों से सुसज्जित यह पुस्तक तुम्हारे हाथों में देते हुए अत्यधिक हर्ष हो रहा है ।

तुम्हें गेय कविता, गीत, गजल सुनना प्रिय रहा है । कहानियों के विश्व में विचरण करना मनोरंजक लगता है । निबंध, आत्मकथा जैसी विधाएँ तुम्हारे ज्ञानार्जन के लिए उपयोगी हैं । प्रयोगधर्मी बच्चों को पुस्तक में आए संवाद, एकांकी, नाटक आदि बोलने हेतु प्रोत्साहित करेंगे । इसमें भाषाई कौशल- श्रवण, भाषण-संभाषण, वाचन, लेखन ये चारों क्षमताएँ तुम्हें भाषा की दृष्टि से सक्षम बनाने के लिए आवश्यक रूप से दी गई हैं ।

डिजिटल दुनिया की नई सोच, चिकित्सक दृष्टि तथा अभ्यास को खोजबीन, सदैव ध्यान में रखो, जरा सोचो तो, मैंने क्या समझा आदि के माध्यम से पाठ्‌यपुस्तक में प्रस्तुत किया गया है । तुम्हारी सर्जना और पहल को ध्यान में रखते हुए अनेक स्वयं अध्ययन संबंधी कृतियाँ दी गई हैं । अपेक्षित भाषाई प्रवीणता के लिए भाषा अध्ययन, अध्ययन कौशल, विचार मंथन, मेरी कलम से, पूरक पठन आदि को अधिक व्यापक और रोचक बनाया गया है ।

लक्ष्य की प्राप्ति बिना मार्गदर्शक के पूरी नहीं हो सकती । अतः अपेक्षित प्रवीणता तथा उद्‌देश्य की पूर्ति हेतु अभिभावकों, शिक्षकों का सहयोग तथा मार्गदर्शन तुम्हारे कार्य को सफल बनाने में सहायक सिद्‌ध होगा ।

विश्वास है कि तुम सब पाठ्‌यपुस्तक का उपयोग कुशलतापूर्वक करोगे और हिंदी विषय के प्रति विशेष अभिरुचि एवं आत्मीयता की भावना के साथ उत्साह प्रदर्शित करोगे ।

(डॉ. सुनिल मगर)
संचालक
महाराष्ट्र राज्य पाठ्‌यपुस्तक निर्मिती व
अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ पुणे-०४

पुणे
दिनांक :- २८ मार्च २०१७

* अनुक्रमणिका *

पहली इकाई

क्र.	पाठ का नाम	पृष्ठ क्र.
१.	वाचन मेला	१
२.	फूल और काँटे	२-४
३.	दादी माँ का परिवार	५-८
४.	देहात और शहर	९-१२
५.	बंदर का धंधा	१३
६.	'पृथ्वी' से 'अग्नि' तक	१४-१७
७.	जहाँ चाह, वहाँ राह	१८-२१
८.	जीवन नहीं मरा करता है 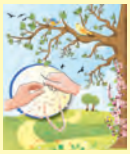	२२-२४
	* अभ्यास - १	२५
	* पुनरावर्तन - १	२६

दूसरी इकाई

क्र.	पाठ का नाम	पृष्ठ क्र.
१.	अस्पताल	२७
२.	बेटी युग	२८-३०
३.	दो लघुकथाएँ	३१-३४
४.	शब्द संपदा	३५-३८
५.	बसंत गीत	३९
६.	चंदा मामा की जय	४०-४३
७.	रहस्य 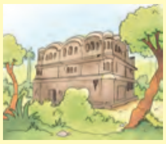	४४-४७
८.	हम चलते सीना तान के	४८-५०
	* अभ्यास - २	५१
	* अभ्यास - ३ चित्रकथा	५२-५३
	* पुनरावर्तन - २	५४

● देखो, समझो और बताओ :

१. वाचन मेला

❑ **अध्यापन संकेत :** विद्‌यार्थियों से चित्र का सूक्ष्म निरीक्षण कराएँ । शब्द और वाक्य समझाएँ । प्रदर्शनी में की जाने वाली उद्‌घोषणाएँ सुनने के लिए कहें । पुस्तक संबंधी अन्य घोषवाक्य बनवाएँ । इंटरएक्टिव आदि डिजिटल साहित्य की जानकारी देकर प्रयोग करवाएँ ।

● **सुनो, समझो और गाओ :**

२. फूल और काँटे

– अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

जन्म : १८६५, आजमगढ़ (उ.प्र.) **मृत्यु :** १९४७ **रचनाएँ :** प्रियप्रवास, पद्‌य प्रसून, वैदेही वनवास, अधखिला फूल, प्रेमकांता आदि ।
परिचय : अयोध्यासिंह उपाध्याय जी का खड़ी बोली हिंदी के प्रारंभिक कवियों में मूर्धन्य स्थान है । आप हिंदी के एक आधार स्तंभ हैं ।
प्रस्तुत कविता में कवि ने यह स्पष्ट किया है कि मनुष्य विशिष्ट कुल में जन्म लेने से नहीं बल्कि अपने कर्मों से ही बड़ा बनता है ।

विचार मंथन

।। भूलकर भी न करें भूल–बनें फूल, नहीं शूल ।। निम्न आधार पर चर्चा करो :

- भूल
- फूल
- शूल

हैं जनम लेते जगह में एक ही,
एक ही पौधा उन्हें है पालता,
रात में उनपर चमकता चाँद भी,
एक ही–सी चाँदनी है डालता ।।१।।

मेह उनपर है बरसता एक–सा,
एक–सी उनपर हवाएँ हैं बही,
पर सदा ही यह दिखाता है हमें,
ढंग उनके एक–से होते नहीं ।।२।।

❑ उचित हाव–भाव, लय–ताल के साथ कविता का पाठ करें । विद्‌यार्थियों से व्यक्तिगत, गुट में, सामूहिक सस्वर पाठ कराएँ । मौन पाठ कराके कविता के प्रमुख मुद्‌दों पर चर्चा कराएँ । प्रश्नोत्तर के माध्यम से कविता के भाव स्पष्ट करें ।

स्वयं अध्ययन

दिए गए चित्रों से संबंधित सुनी हुई कोई कविता सुनाओ :

छेदकर काँटा किसी की उँगलियाँ,
फाड़ देता है किसी का वर वसन,
प्यार डूबी तितलियों के पर कतर,
भौंर का है वेध देता श्याम तन ।।३।।

फूल लेकर तितलियों को गोद में,
भौंर को अपना अनूठा रस पिला,
निज सुगंध 'औ' निराले रंग से,
है सदा देता कली जी की खिला ।।४।।

है खटकता एक सबकी आँख में,
दूसरा है सोहता सुर सीस पर,
किस तरह कुल की बड़ाई काम दे,
जो किसी में हो बड़प्पन की कसर ।।५।।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

मेह = बादल
वर = श्रेष्ठ, सुंदर
वसन = वस्त्र
वेध = छेदना
भौंर = भँवरा
जी = मन
सोहना = शोभा देना
सीस = सिर

मुहावरा

जी की कली खिलना = खुश होना

बताओ तो सही

तुम्हें कौन-सा फूल पसंद है; क्यों ?
निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर बताओ :

फूल का नाम
- उपयोग
- गंध

❑ **कृति/प्रश्न हेतु अध्यापन संकेत –** प्रत्येक कृति/प्रश्न को शीर्षक के साथ दिया गया है । दी गई प्रत्येक कृति/प्रश्न के लिए आवश्यक सामग्री उपलब्ध कराएँ । क्षमताओं और कौशलों के आधार पर इन्हें विद्यार्थियों से हल करवाएँ । आवश्यकतानुसार विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करते हुए अन्य शिक्षकों की भी सहायता प्राप्त करें । 'दो शब्द' में दी गई सूचनाओं का पालन करें । **दिए गए सभी कृति/प्रश्नयुक्त स्वाध्यायों का उपयोग कक्षा में समयानुसार 'सतत सर्वंकष मूल्यमापन' के लिए करना है ।**

खोजबीन

आसपास के पेड़-पौधों के नामों का वर्गीकरण करो :

छोटे	मध्यम	बड़े

वाचन जगत से

संकेत स्थल पर जाकर महाराष्ट्र राज्य के खादी ग्रामोद्योग की जानकारी पढ़ो और मुद्दों के आधार पर भाषण तैयार करो :

कपास → धागा → बुनाई → निर्माण प्रक्रिया → वितरण → विक्रय

सदैव ध्यान में रखो

प्रत्येक परिस्थिति का सामना हँसते हुए करना चाहिए ।

१. रिक्त स्थान की पूर्ति करो :

(क) रात में उनपर ----- चाँद भी,
एक ही-सी ----- है डालता ।

(ख) प्यार डूबी तितलियों के ----- कतर,
भौंर का है वेध देता -----तन ।

२. एक वाक्य में उत्तर लिखो :

(च) फूल किनको गोद में लेता है ?

(छ) बड़प्पन की कसर रह जाने पर क्या काम नहीं देती ?

(ज) कौन एक-सा बरसता है ?

(झ) फूल किसको रस पिलाता है ?

भाषा की ओर

निम्नलिखित वर्णों से समानार्थी और विरुद्धार्थी शब्दों की जोड़ियाँ ढूँढ़ो और अपने वाक्यों में प्रयोग करके कॉपी में लिखो :

पुष्प = फूल

रात × दिन

---------=---------

---------×---------

---------=---------

---------×---------

---------=---------

---------×---------

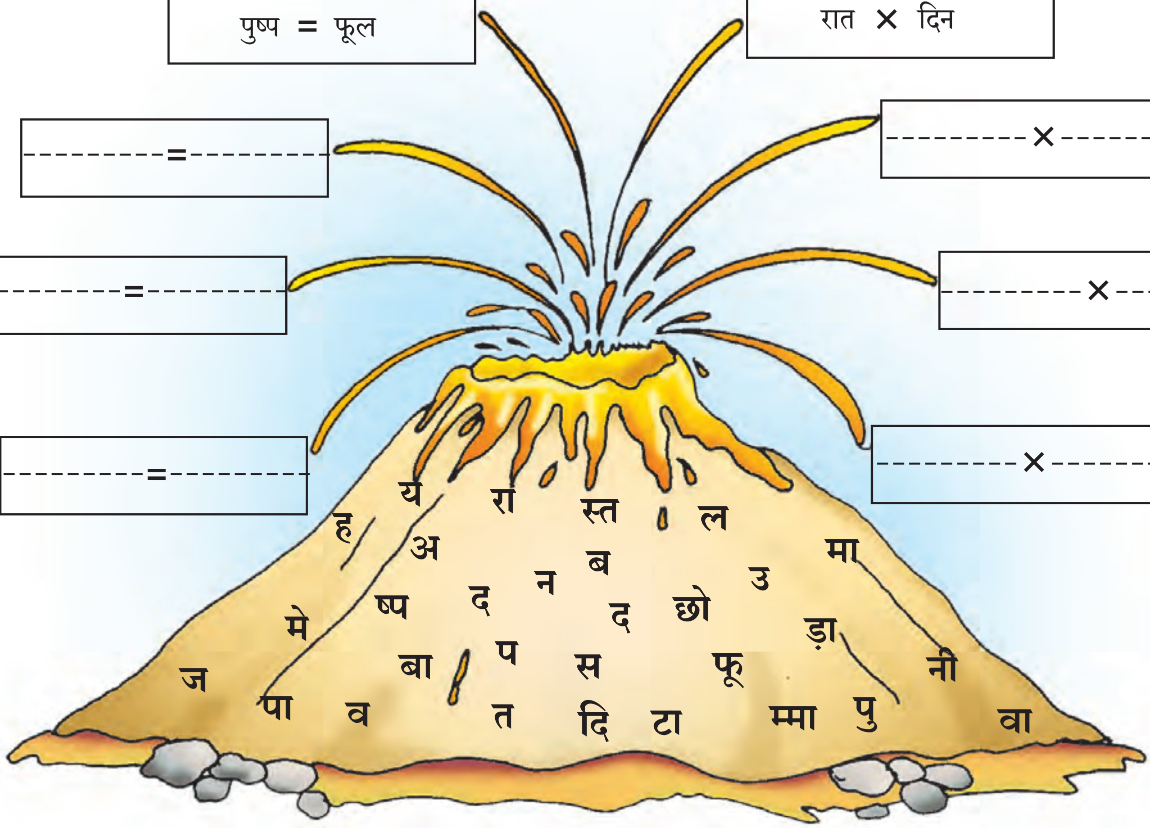

● **सुनो, समझो और पढ़ो :**

३. दादी माँ का परिवार

– रमाकांत 'कांत'

जन्म : २५ अक्टूबर १९४९, खंडेला (उ. प्र.) **रचनाएँ :** एक तेरे बिना, सुनो कहानी, सरस बाल कथाएँ, जंगल की कहानियाँ, परिश्रम का वरदान, सूझ-बूझ की कथाएँ आदि । **परिचय :** रमाकांत 'कांत' जी की रचनाएँ सुप्रतिष्ठित बाल पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं ।

प्रस्तुत कहानी में लेखक ने यह बताया है कि संकट के समय शांति, एकाग्रता, धैर्य और एकता के साथ कार्य संपन्न करने चाहिए ।

जरा सोचो .... बताओ

यदि प्राकृतिक संसाधन समाप्त हो जाएँ तो...... जैसे- जल, वन आदि ।

एक छोटे-से घर में दादी माँ रहती थीं । यों तो वह निपट अकेली थीं फिर भी घर आबाद था उनका । रोज सुबह दादी माँ उठतीं । घर बुहारतीं-सँवारतीं । आँगन में आसन धरतीं, खाना बनातीं, खातीं । परिवारजनों से बतियातीं । रात होती, सो जातीं । दिन मजे में गुजर रहे थे । परिवारजन फल-फूल रहे थे ।

अब सुनो परिवार की कहानी । दादी माँ थीं-समझदार, सयानी । घर के आँगन में बरगद का पेड़ था । उसपर घोंसला बना था । घोंसले में रहती थी चिड़िया । वह दादी माँ की थी संगिया । चिड़िया का नाम था नीलू । सुबह उठ दादी आँगन बुहारतीं । नीलू फुदकती-चिंचियाती । दादी माँ से बतियाती ।

एक और थी दादी माँ की साथिन-चिंकी चुहिया । पेड़ के नीचे बिल बनाकर रहती । दिनभर घर में उसकी दौड़ लगती । यह थी दादी माँ की दीन-दुनिया । दादी माँ, चिड़िया और चुहिया । वे सब यदि होतीं खुश, तो दादी माँ भी रहतीं खुश । दादी माँ हुईं कभी दुखी तो वे भी नहीं रहती थी सुखी ।

ठंडी के दिन थे । उन्हीं दिनों नीलू चिड़िया ने अंडे दिए । उनमें से निकले दो बच्चे । नन्हे, सुंदर, अच्छे-अच्छे । टीनू-मीनू नाम निकाला । सबने मिलकर पोसा-पाला । चिंकी को दो बेटों के उपहार मिले । चुसकू-मुसकू थे बड़े भले । दादी माँ उनका खयाल रखतीं । उनसे मन बहलातीं । स्नेह-प्यार से वह दुलारतीं । रोने लगते तो पुचकारतीं । चारों बच्चे घर-आँगन में दौड़ लगाते । हँसते-खेलते और खाते-गाते ।

खेल-खेल में वे लड़ भी पड़ते । दादी माँ उन्हें समझातीं । कहतीं, 'मेरे बच्चो, मत लड़ो । झगड़े-टंटों में मत पड़ो । तनिक एकता का ध्यान धरो । सब मिलकर रहा करो। तब ही तो कहते हैं, 'एकता है जहाँ, खुशहाली है वहाँ ।' यों दिन कट रहे थे हँसी-खुशी से । परिवार में सब रह रहे थे खुशी-खुशी से । दादी माँ रोज उन्हें समझातीं । एकता के उनको लाभ गिनातीं ।

एक बार संकट आ गया । चिड़ियों में मातम छा गया । नीलू दाना चुगने चली गई । संग बच्चों को भी ले गई । अन्य चिड़े-चिड़ियाँ भी थे उसके साथ, खलिहानी में धान उगे हुए थे भात । सूरज की किरणें ढल रही थीं । चिड़ियाँ दाना चुग रही थीं । अचानक

❑ कहानी के किसी एक परिच्छेद का आदर्श वाचन करें । विद्यार्थियों से मुखर वाचन कराएँ । इसकी प्रमुख घटनाओं पर चर्चा कराएँ । विद्यार्थियों को कहानी उनके शब्दों में कहने के लिए प्रेरित करें । उन्हें सुनी हुई अन्य कहानी कक्षा में सुनाने के लिए प्रोत्साहित करें ।

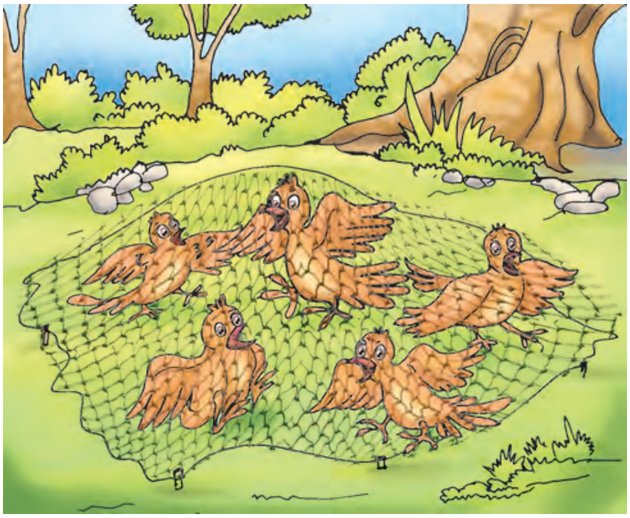

सुनो तो जरा

सुने हुए चुटकुले, हास्य प्रसंगों को पुनःस्मरण करके सुनाओ ।

मुनमुन को ध्यान आया । उसने सबको बतलाया । सासू माँ आने वाली हैं । घोंसले में कोई नहीं, वह खाली है ।

घर जाने की उसने विदा ली । सबसे 'टाटा-टाटा, बाय-बाय' कर ली । अब वह उड़ने को हुई । बेचारी उलझकर रह गई । ''अरे! मैं फँस गई'', वह चिल्लाई । नीलू ने उसकी पुकार सुनी । दूसरी चिड़ियों ने भी बात सुनी । नीलू उसके पास जाने लगी, पर उसकी भी रही बेचारगी । तब वह बात समझ पाई, फिर चिंचियाकर चिल्लाई । बोली, ''अरे, हम सब उलझ गए हैं । बहेलिए के जाल में फँस गए हैं ।'' बहुतेरे उन्होंने यत्न किए । निकल न सके, उलझ गए । चिड़े-चिड़ियाँ हुए उदास । खत्म हुई घर जाने की आस । सभी के हो रहे थे हाल-बेहाल । आ रहा था, बच्चों का खयाल । बुरी बातें वे सोचने लगे । सिसक-सिसककर रोने लगे । नीलू-टीनू-मीनू थे एकदम शांत । हालाँकि चिंता से थे वे भी क्लांत । फिर दादी माँ की सीख सुनाई । दी उन्हें एकता की दुहाई । मुनमुन थी उनकी हमजोली । तुनककर वह यों बोली, ''हममें एकता है, लड़ नहीं रहे हैं । हार गए हैं, जाल में फँसे हुए हैं । चाहे कितनी भी एकता रखो । क्या धरा है, जब कुछ कर न सको ।''

टीनू बोली, ''बस, इतने में ही डर गई ? हम जरूर जीत जाएँगे, एकता की ताकत दिखाएँगे ।'' मुनमुन बोली, ''आखिर चाहते हो कैसी एकता ? तनिक खोलो अपनी अक्ल का पत्ता ।'' टीनू ने समझाई युक्ति । उससे मिल सकती थी मुक्ति । योजना सबके मन को भाई । उसमें थी सबकी भलाई । टीनू बोली, ''मीनू कहेगी-एक, दो, तीन, चार । उड़ने को रहेंगे तैयार । हम एक साथ उड़ पड़ेंगे । एक ही दिशा में चलेंगे।''

सब हो गए होशियार । उड़ने को थे वे तैयार । मीनू बोली, ''एक, दो, तीन, चार ।'' उड़ चले सब पंख पसार । जाल सहित वे उड़ लिए । मन में आशा और विश्वास लिए । गजब एकता थी उन सबमें । उमंग हिलोरें ले रही थीं मन में ।

बहेलिया ठगा-सा रह गया । सोच रहा था, 'पंछियों ने यह किया ?' क्या करता वह बेचारा ? एकता के आगे था हारा । चिड़े-चिड़ियाँ तनिक न सकुचे । सीधे दादी माँ के घर पहुँचे । चिंतित दादी बैठी मुँह लटकाए । बुरे विचार मन में आए । चिंकी की आँखों में आँसू थे । उदास हो रहे चुसकू-मुसकू थे । दादी माँ का चरखा शांत । सबका मन हो रहा क्लांत ।

अचानक कलरव हुआ आँगन में । सबने देखा आनन-फानन में । चिंचिया रहे थे पक्षी बहुत सारे । उनमें थे नीलू-टीनू-मीनू प्यारे । विचित्र हाल उनका देखा । अनेक थे, पर था उनमें एका । एक साथ आँगन में उतरे । मानो वे मित्र हों गहरे । चिंकी उधर पहुँची । दादी माँ ने की गरदन ऊँची । खटिया पर बैठी थी वह भोली । देख, उन्हें वह यों बोली, ''बहुत देर से आई हो नीलू आज । खैरियत तो है, क्या हुआ था काज ?''

नीलू ने हाल सुनाया । दादी माँ को सब बतलाया । यों पहुँची पंछियों की टोली । दादी माँ हँसीं और बोलीं, ''टीनू-मीनू हैं समझदार । तभी तो किया खबरदार ! जान तुम्हारी बच गई है । यही अच्छी बात हुई है ।'' ''सच है जान हमारी बची । पर अब भी हैं जाल में फँसी । तनिक हमें सँभालो । इससे बाहर निकालो ।''

दादी माँ तब मुसकाईं । राज की बात उन्हें बताईं ।

❑ विद्यार्थियों से कहानी में आए लयात्मक शब्द खोजवाकर लिखवाएँ । इन शब्दों को लेकर नए शब्द, वाक्य बनाने के लिए प्रेरित करें । ध्वन्यात्मक शब्दों के बारे में चर्चा करें । जैसे-कल-कल, टप-टप आदि । मुहावरों-कहावतों का अर्थ समझाएँ और उनकी सूची बनवाएँ ।

मेरी कलम से

निम्नलिखित शब्दों के आधार पर एक कहानी लिखो : पानी, पुस्तक, बिल्ली, राखी ।

उँगली उठाकर बोलीं, ‘‘काम करेगी एकता की गोली । बच्चो, उसमें ही शक्ति है । वही बचने की युक्ति है । वह तुम्हें बचाएगी । जाल से मुक्त कराएगी ।’’ नीलू बोली, मीठी बोली, ‘‘हम एक हैं, पर क्या करें ? बच जाएँ, कुछ ऐसा जतन करें ।’’

दादी माँ ने समझाया । फिर से एकता का पाठ पढ़ाया । वह बोलीं, ‘‘एकता पंछियों की ही नहीं, औरों में भी होनी चाहिए वही । यह बात सदैव ध्यान में रखते, एक और एक ग्यारह होते । किसी तरह की तुम झिझक न करो । चिंकी से तनिक याचना करो । वह तुम्हें बंधन से बचाएगी । जाल काट, बाहर ले आएगी ।’’ टीनू-मीनू ने कहा, ‘‘हम आजाद हो रहे, अहा ! मौसी, चुसकू-मुसकू को बुलाओ । सब मिलकर हमें बचाओ ।’’ यही बात नीलू ने कही । भेद किया किसी ने नहीं। बात चिंकी के मन को भाई । दौड़-भाग, झटपट आई । दादी यों बोलीं, ‘‘मिलकर रहो हमजोली । एक रहोगे तुम सब । हार नहीं मिलेगी तब ।’’

चिंकी गई, जाल के पास । चुसकू-मुसकू भी थे आसपास । पैने दाँतों से काटा जाल । आजाद हुए सब तत्काल । चिड़े-चिड़ियाँ चिंचिया रहे । दादी माँ से बतिया रहे । टीनू-मीनू, चुसकू-मुसकू खेलने लगे । सब थे प्रेम-स्नेह में पगे । दादी माँ की सीख रंग लाई । सबने दी एकता की दुहाई । सबका एक साथ मुँह खुला- ‘अंत भला तो सब भला’ ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

निपट = केवल, मात्र
आबाद = भरा-पूरा
बुहारना = स्वच्छ करना
दीन-दुनिया = संसार
खलिहानी = कटी फसल रखने का स्थान
क्लांत = थका हुआ
कलरव = पंछियों की मधुर ध्वनि
आनन-फानन में = शीघ्रता से

मुहावरे

तुनककर बोलना = चिढ़कर बोलना
अक्ल का पत्ता खोलना = तरकीब बताना
ठगा-सा रहना = चकित होना

कहावतें

एक और एक ग्यारह = एकता में बल
अंत भला तो सब भला = परिणाम अच्छा तो सब अच्छा

अध्ययन कौशल

अपने और किसी पड़ोसी राज्य के राष्ट्रीय अभयारण्यों की शासकीय वीडियो क्लिप्स, फिल्म्स आदि देखकर वर्गीकरण करो एवं टिप्पणी बनाओ :

- राज्य का नाम
- अभयारण्य का नाम
- विशेषताएँ

विचार मंथन

।। वृक्षवल्ली आम्हां सोयरे वनचरे ।।

वाचन जगत से

स्वामी विवेकानंद का कोई भाषण पढ़ो और प्रमुख वाक्य बताओ ।

सदैव ध्यान में रखो

संगठन में ही शक्ति है, इसे जीवन में उतारो ।

१. घटना के अनुसार क्रम लगाकर लिखो :

(क) चिंकी ने भी दो बेटों का उपहार दिया ।
(ख) एक साथ उड़ने को रहेंगे तैयार ।
(ग) टीनू-मीनू , चुसकू-मुसकू खेलने लगे ।
(घ) घर के आँगन में बरगद का पेड़ था ।

२. एक-दो वाक्यों में उत्तर लिखो :

(च) चिड़िया कहाँ रहती थी ?
(छ) बहेलिया कब ठगा-सा रह गया ?
(ज) दादी माँ सुबह उठकर क्या करतीं ?
(झ) चुसकू-मुसकू ने किससे जाल काटा ?

भाषा की ओर

निम्नलिखित शब्दों के वचन बदलकर वाक्य में प्रयोग करके लिखो :

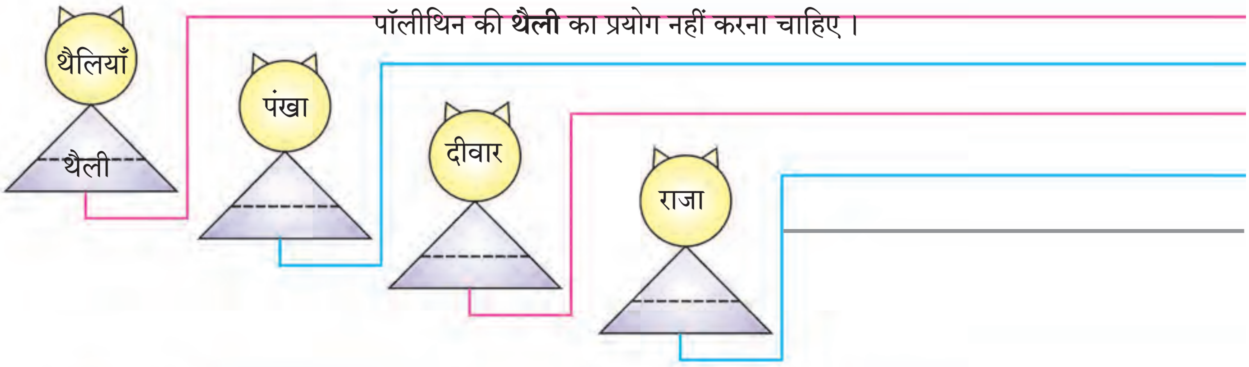

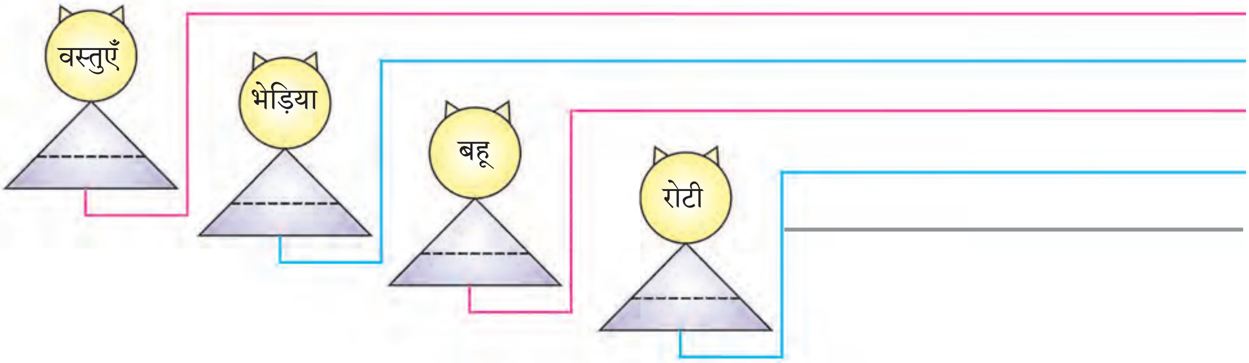

● सुनो, पढ़ो और लिखो :

४. देहात और शहर

– अभिषेक पांडेय

जन्म : २९ जनवरी १९९२, मुंबई (महाराष्ट्र) **परिचय :** सम-सामयिक विषयों में अभिषेक पांडेय जी की विशेष अभिरुचि एवं लेखन रहा है। प्रस्तुत पत्रों में लेखक ने देहात और शहर के अपने सुख-दुख एवं बढ़ती हुई जनसंख्या के अभिशाप पर अनेक सुझाव दिए हैं ।

खोजबीन

डाकघर से प्राप्त सेवाएँ बताओ और संकेत स्थलों से अन्य सेवाएँ ढूँढ़कर उनकी सूची बनाओ ।

सेवाओं के नाम | कब ली जाती हैं ?

दिनांक १ अगस्त, २०१७

प्रिय मित्र शहर,

नमस्कार ।

कल तुमसे बात हुई । मेरे सुख-दुख के संबंध में पूछा । धन्यवाद ! बहुत सारी बातें मन में हैं, सब कुछ दूरध्वनि पर कहना मुश्किल है । सोचा; पत्र ही लिखूँ । अब मैं अपना दुखड़ा क्या रोऊँ? चलिए, इस बार कुछ अच्छी बातें भी तुमसे साझा करता हूँ । 'डिजिटल' क्रांति का थोड़ा असर हमारे गाँव में भी दिखाई पड़ने लगा है । 'मोबाइल' के माध्यम से नित-नवीन सूचनाएँ हम तक पहुँचने लगी हैं । 'स्वच्छ ग्राम-स्वस्थ ग्राम' परियोजना घर-घर तक पहुँच गई है । ग्रामजन भी शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, खेती के नवीन औजारों और आधुनिक खेती की पद्धतियों को थोड़ा-थोड़ा जानने लगे हैं । 'घर-घर में शौचालय' जैसी सुविधा के प्रति लोग जागरूक हो रहे हैं ।

हालाँकि कुछ परेशानियाँ अब भी वहीं की वहीं हैं । पीने का पानी लाने के लिए दूर-दूर तक जाना पड़ता है । मेरे यहाँ विद्यालय तो हैं पर उनमें आवश्यक सुविधाएँ नहीं हैं । महाविद्यालय तो हमारे गाँव से बहुत दूर है । तुम्हारे बारे में सोचता हूँ तो लगता है कि तुम्हारे पास अत्याधुनिक और अच्छी सुविधाएँ, विकसित तकनीक हैं । तुम्हारी दिन दूनी-रात चौगुनी उन्नति हो रही है । तुम कितने सुखी हो ! यातायात के आधुनिक साधन, पक्की चौड़ी सड़कें, बड़े-बड़े शॉपिंग मॉल और चौबीस घंटे बिजली की सुविधा तुम्हारी शान में चार चाँद लगा देती हैं । कभी-कभी मन बहुत उदास हो जाता है । एक जमाना था, जब मेरे यहाँ बहुत खुशहाली थी । चारों तरफ हरियाली थी पर अब पहले जैसी रौनक नहीं रही । मैं असुविधा, बेरोजगारी, आपसी झगड़े, गुटबाजी, अशांति जैसी समस्याओं से घिरता

❑ पत्र का मुखर वाचन कराएँ । प्रश्नोत्तर के माध्यम से इन पत्रों के मुख्य मुद्दों पर चर्चा कराएँ । देखे हुए देहात-शहर में क्या-क्या अंतर होता है, बताने के लिए प्रेरित करें । आदर्श गाँव/शहर में क्या-क्या होना चाहिए, पूछें । बढ़ती जनसंख्या की समस्या पर चर्चा करें ।

विचार मंथन

'गाँव का विकास, देश का विकास' इस विषय पर संवाद सुनो और सुनाओ ।

जा रहा हूँ । यहाँ के कुछ अशिक्षित और अल्पशिक्षित लोग परिवार कल्याण के प्रति आज भी उदासीन हैं । जनसंख्या भी बढ़ रही है । उनके लिए यहाँ काम-धंधा नहीं है ।

रोजगार की तलाश में लोग शहर जा रहे हैं । यहाँ काम के लिए मजदूर नहीं मिल रहे हैं । शहरी चमक-दमक और आधुनिक सुविधाओं की ओर आकर्षित होकर लोग मुझे अकेला छोड़कर तुम्हारी ओर दौड़ रहे हैं । यहाँ स्वास्थ्य सुविधाएँ भी नहीं हैं । बीमारियाँ हैं पर पर्याप्त मात्रा में सुसज्ज और अच्छे अस्पताल नहीं हैं। लोगों को ठीक समय पर दवा नहीं मिल पाती है। मेरा परिवार टूट-सा रहा है । बताइए मैं क्या करूँ ?

तुम्हारा मित्र
देहात

प्रिय मित्र देहात,   दिनांक १५ अगस्त, २०१७

नमस्कार ।

आज स्वतंत्रता दिवस है इस उपलक्ष्य में हार्दिक बधाई ! पत्र मिला । तुम्हारी प्रगति के बारे में जानकर खुशी हुई । मित्र ! परिवर्तन सृष्टि का नियम है । भला तुम्हारी स्थिति क्यों न बदलती; धीरे-धीरे और भी विकास होगा।

'धीरे-धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय,
माली सींचे सौ घड़ा, ऋतु आए फल होय ।'

माना कि कुछ परेशानियाँ हैं । वहाँ के परिवार तेजी से मेरे यहाँ आ रहे हैं परंतु यहाँ आकर भी सब कहाँ सुखी हैं? चिराग तले अँधेरा है । जिन बस्तियों में, जिन हालातों में वे रहते हैं, तुम सुनोगे तो और बेचैन और व्यथित हो जाओगे । मेरे यहाँ की दिन-ब-दिन बढ़ती भीड़ से मैं परेशान हो उठा हूँ । जिस चमक-दमक की बात तुम कर रहे हो, वह सबको कहाँ उपलब्ध है? तुम्हारे यहाँ से जो यहाँ आते हैं, कई बार बाद में पछताते भी हैं ।

मैं चाहता हूँ कि तुम अपने लोगों को समय रहते अपना महत्त्व समझाओ । 'छोटा परिवार-सुखी परिवार' की बात अब उनकी समझ में आ जानी चाहिए । तुम उन्हें बुराइयों से दूर रखकर विभिन्न व्यावसायिक कौशलों, कंप्यूटर संबंधी जानकारी विकसित करने की तरफ ध्यान दो । खेल तो ग्रामीण जीवन की आत्मा है । दौड़ना, तैरना, पेड़ों पर चढ़ना-उतरना तो वहाँ के बच्चों की रग-रग में रचा-बसा है । आज कितने विख्यात खिलाड़ी गाँव से ही आगे बढ़े हैं। उनको प्रोत्साहित करना तुम्हारी नैतिक जिम्मेदारी है । खेल संबंधी मार्गदर्शन देकर हमारा देश अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रगति कर सकता है । अपने गाँव को एक परिवार समझकर उसे विकसित करने का प्रयत्न

❑ पत्र के प्रारूप और पत्र लेखन के मुद्दों पर चर्चा करें और लेखन कराएँ । औपचारिक और अनौपचारिक पत्रलेखन के बारे में जानकारी दें । किन-किन अवसरों पर अभिनंदन, बधाई पत्र लिखा जा सकता है, पूछें । अभिनंदन, बधाई पत्र लिखने के लिए प्रोत्साहित करें ।

बताओ तो सही

हिंदी की विभिन्न बोलियों के नाम बताओ और उनसे संबंधित प्रदेशों के नाम लिखो :
जैसे-ब्रज, भोजपुरी, मारवाड़ी, दक्खिनी, गढ़वाली आदि ।

करना होगा। तुम्हारी और मेरी समस्या का मूल कारण दिनोंदिन बढ़ती आबादी, अशिक्षा और गरीबी है।

मेरे यहाँ लोग रोजगार की तलाश में आना कम कर दें। तुम गाँववालों को सहकारिता का महत्त्व समझाओ। सहकारिता पर आधारित छोटे-छोटे व्यवसाय तुम अपने यहाँ शुरू करवाओ ताकि कृषि आधारित अनेक लघु उद्‌योग, फलोत्पादन, औषधीय वनस्पतियों की खेती, पशुपालन जैसे अनेक व्यवसाय शुरू किए जा सकते हैं। अरे देहात भाई ! कितने भाग्यशाली हो कि तुम प्रदूषणमुक्त वातावरण में रहते हो । खुला-खुला परिसर, न धुआँ, न वाहनों की चिल्लपों, हरे-भरे पेड़ ये सब चीजें तुम्हारे पास हैं। रात में तारों भरा आसमान तो सबेरे उगते सूरज के दर्शन कितनी सहजता, सरलता से हो जाते हैं । हम तो इमारतों के जंगल में बदल गए हैं । खुला आसमान, बड़ा मैदान हमारे लिए कितने अनमोल एवं दुर्लभ हो गए हैं, ये तुम नहीं समझ सकते। तुम्हारे तहसील और क्षेत्र के लोगों को चाहिए कि वे अपने क्षेत्र का सर्वांगीण विकास करने के लिए अपने जनप्रतिनिधियों का सहयोग लें ।

तुम्हारे यहाँ जो बच्चे विद्‌यालय में पढ़ रहे हैं, यदि अभी से उन्हें सही दिशा, उचित मार्गदर्शन दिया जाए तो भविष्य में वे ही हम सबकी व्यथा कम कर सकते हैं। वे ही हमारे आशा स्थान हैं ।

मुझे पूरा विश्वास है कि उनपर अवश्य ध्यान दिया जाएगा ।

तुम्हारा अपना
शहर

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

साझा करना = बाँटना
रौनक = चमक-दमक
व्यथित = दुखी
विख्यात = बहुत प्रसिद्‌ध
आबादी = जनसंख्या
चिल्लपों = शोर

मुहावरे

दुखड़ा रोना = दुख सुनाना
दिन दूनी-रात चौगुनी उन्नति = तेज गति से विकास
चार चाँद लगाना = शोभा बढ़ाना

कहावत

चिराग तले अँधेरा = योग्य व्यक्ति के आसपास ही अयोग्यता

वाचन जगत से

गाँव संबंधी सरकारी योजनाओं की जानकारी पढ़ो और मुख्य बातें सुनाओ ।

अध्ययन कौशल

सुने हुए नए शब्दों की वर्णक्रमानुसार तालिका बनाकर संभाषण एवं लेखन में प्रयोग करो ।

❑ विद्यार्थियों को महापुरुषों द्‌वारा लिखे पत्रों को पुस्तकालय/अंतरजाल के माध्यम से पढ़ने के लिए प्रेरित करें। संबंधियों द्‌वारा भेजे गए पत्रों का संकलन करने के लिए प्रेरित करें। अपने गाँव-तहसील, शहर के महत्त्वपूर्ण स्थलों का परिचय देने के लिए कहें।

स्वयं अध्ययन

यदि सार्वजनिक यातायात के साधन नहीं होते तो इनपर क्या प्रभाव पड़ता, लिखो :

गाँव | शहर | महानगर | देश

सदैव ध्यान में रखो

गाँव की समृद्धि में ही शहर की खुशहाली समाहित है ।

१. वाक्य के सामने सही ☑ या गलत ☒ चिह्न लगाओ :

(क) खेल ग्रामीण जीवन की आत्मा है । ☐

(ख) गाँव में बीमारियाँ हैं पर पर्याप्त मात्रा में सुसज्ज और अच्छे अस्पताल हैं । ☐

२. कारण लिखो :

(च) गाँवों में काम करने के लिए मजदूर नहीं मिल रहे हैं ।

(छ) शहर परेशान हो उठा है ।

(ज) गाँव बहुत उदास हो जाता है ।

भाषा की ओर

निम्नलिखित शब्दों के लिंग बदलो और वाक्य बनाकर लिखो :

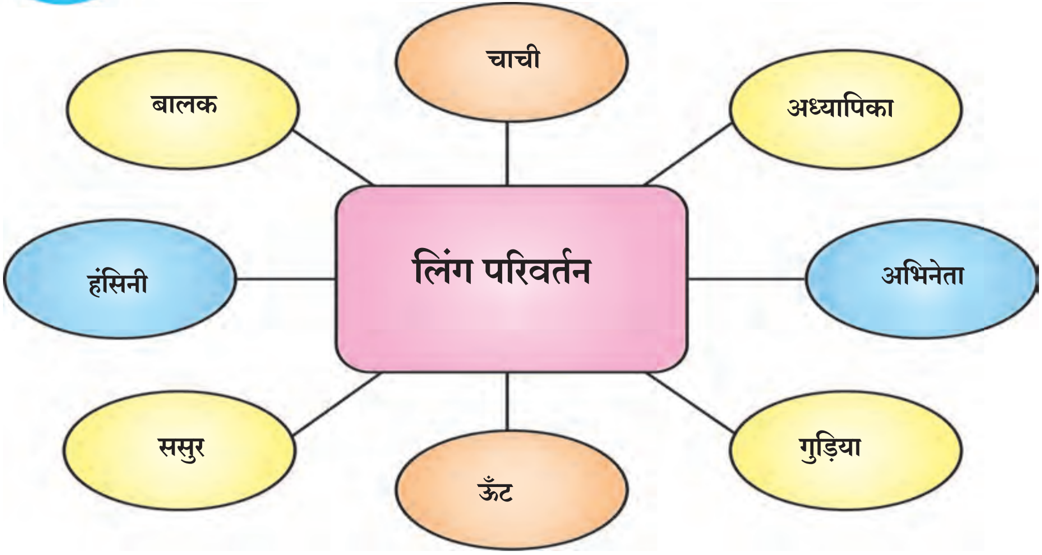

१. **चाचा जी** प्रकल्प में मेरा मार्गदर्शन करते हैं ।

२. ....

३. ....

४. ....

५. ....

६. ....

७. ....

८. ....

● पढ़ो और गाओ :

५. बंदर का धंधा

– नरेंद्र गोयल

जन्म : २१ अक्तूबर १९६३, पिलखुवा, गाजियाबाद (उ.प्र) **रचनाएँ :** गीत माला, गीतगंगा, गीतसागर, झूला झूलें, चींचीं चिड़ियाँ आदि।
परिचय : नरेंद्र गोयल जी आप बाल मनोविज्ञान के ज्ञाता जाने जाते हैं । आपने बालोपयोगी बहुत सारी रचनाएँ हिंदी जगत को दी हैं ।
प्रस्तुत कविता में कवि ने वनौषधियों द्‌वारा होने वाले पारंपरिक उपचारों; उसके प्रभावों पर हास्य के माध्यम से प्रकाश डाला है ।

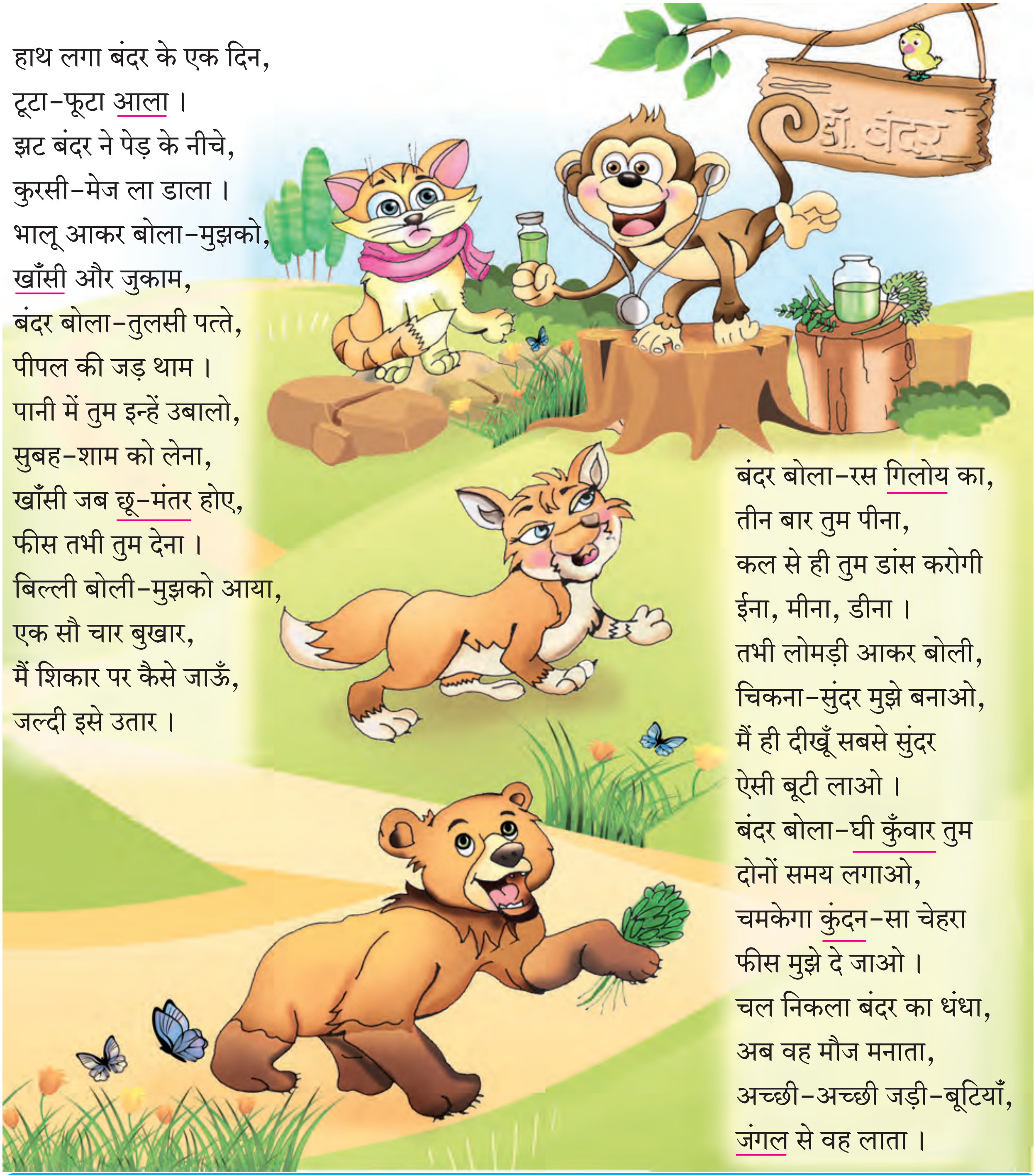

हाथ लगा बंदर के एक दिन,
टूटा-फूटा आला ।
झट बंदर ने पेड़ के नीचे,
कुरसी-मेज ला डाला ।
भालू आकर बोला-मुझको,
खाँसी और जुकाम,
बंदर बोला-तुलसी पत्ते,
पीपल की जड़ थाम ।
पानी में तुम इन्हें उबालो,
सुबह-शाम को लेना,
खाँसी जब छू-मंतर होए,
फीस तभी तुम देना ।
बिल्ली बोली-मुझको आया,
एक सौ चार बुखार,
मैं शिकार पर कैसे जाऊँ,
जल्दी इसे उतार ।

बंदर बोला-रस गिलोय का,
तीन बार तुम पीना,
कल से ही तुम डांस करोगी
ईना, मीना, डीना ।
तभी लोमड़ी आकर बोली,
चिकना-सुंदर मुझे बनाओ,
मैं ही दीखूँ सबसे सुंदर
ऐसी बूटी लाओ ।
बंदर बोला-घी कुँवार तुम
दोनों समय लगाओ,
चमकेगा कुंदन-सा चेहरा
फीस मुझे दे जाओ ।
चल निकला बंदर का धंधा,
अब वह मौज मनाता,
अच्छी-अच्छी जड़ी-बूटियाँ,
जंगल से वह लाता ।

❑ विद्‌यार्थियों से कविता का साभिनय पाठ कराएँ । कविता के प्रसंगों का नाट्यीकरण कराएँ । शब्दयुग्मों की सूची बनवाएँ । जड़ी-बूटी से होने वाले लाभ पर चर्चा करें । हास्य कविताएँ पढ़वाएँ । रेखांकित किए शब्दों के अर्थ शब्दकोश से प्राप्त करने के लिए कहें ।

● सुनो, समझो और पढ़ो :

६. 'पृथ्वी' से 'अग्नि' तक

– डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

जन्म : १५ अक्तूबर १९३१, रामेश्वरम (तमिळनाडु) **मृत्यु :** २७ जुलाई २०१५ **रचनाएँ :** अग्नि की उड़ान, छुआ आसमान आदि ।
परिचय : डॉ. अब्दुल कलाम जी ने राष्ट्रपति पद को विभूषित किया । अनमोल योगदान के लिए आपको 'भारतरत्न' सम्मान प्राप्त हुआ है । प्रस्तुत आत्मकथा अंश में लेखक ने 'अग्नि' के प्रक्षेपण में आने वाली कठिनाइयों, वैज्ञानिकों के अथक परिश्रम को बताया है ।

स्वयं अध्ययन

किसी महान विभूति का जीवनक्रम वर्षानुसार बनाकर लाओ और पढ़ो : जैसे– जन्म, शालेय शिक्षा आदि ।

बालासोर में अंतरिम परीक्षण का काम पूरा होने में अब भी कम-से-कम एक साल की देर थी । हमने पृथ्वी के प्रक्षेपण के लिए श्री हरिकोटा अंतरिक्ष केंद्र में विशेष सुविधाएँ स्थापित कीं । इनमें से एक लॉन्च-पैड, ब्लॉक-हाउस, नियंत्रण उपकरण तथा चलित दूर-मिति केंद्र शामिल थे ।

'पृथ्वी' उपग्रह को पच्चीस फरवरी उन्नीस सौ अट्ठासी को सुबह ग्यारह बजकर तेईस मिनट पर छोड़ा गया । यह देश के रॉकेट विज्ञान के इतिहास में एक युगांतरकारी घटना थी । निर्देशित मिसाइलों के क्षेत्र में एक आत्मनिर्भर देश के रूप में उद्‌भव ने संसार के सभी विकसित देशों को विचलित कर दिया । सामर्थ्यशील नागरिक अंतरिक्ष उद्योग और व्यवहार्य मिसाइल आधारित सुरक्षा प्रणालियों ने भारत को चुनिंदा राष्ट्रों के समूह में पहुँचा दिया था ।

लेकिन क्या एक 'पृथ्वी' ही पर्याप्त होगा ? क्या चार-पाँच मिसाइल प्रणालियों का स्वदेशी विकास हमें पर्याप्त रूप से ताकतवर बना पाएगा ? उसी समय 'अग्नि' को एक टेक्नोलॉजी प्रदर्शन परियोजना के रूप में विकसित किया जा रहा था । देश के भीतर उपलब्ध समस्त संसाधनों को दाँव पर लगाकर-यही एक उत्तर था । 'अग्नि' टीम में पाँच सौ से अधिक वैज्ञानिक थे और इन विशाल प्रक्षेपणों में अनेक संगठनों का नेटवर्क बनाया गया था ।

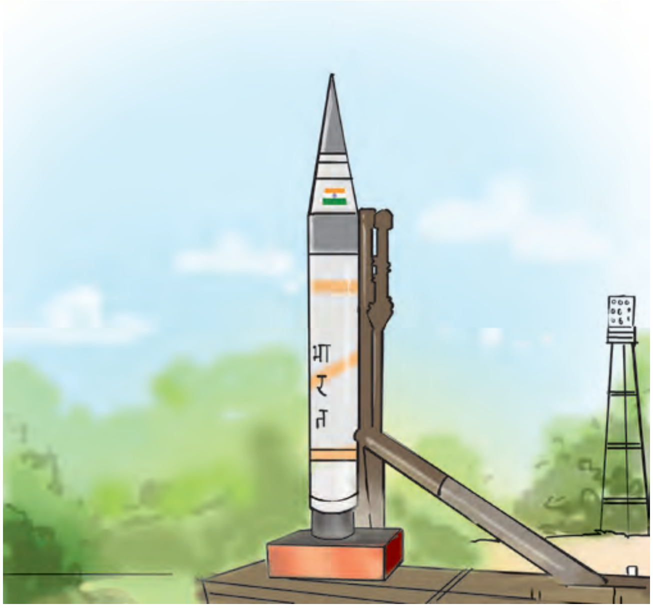

'अग्नि' का प्रक्षेपण बीस अप्रैल उन्नीस सौ नवासी को निर्धारित किया गया । यह एक अभूतपूर्व अभ्यास होने जा रहा था । अंतरिक्ष प्रक्षेपण यान के विपरीत मिसाइल प्रक्षेपण में व्यापक स्तर पर सुरक्षा संबंधी खतरे शामिल होते हैं । प्रक्षेपण की पूर्वतैयारी की सारी गतिविधियाँ तय कार्यक्रम के अनुसार पूरी हो गई थीं ।

जिस समय हम टी.- १४ सेकंड पर थे, कंप्यूटर ने संकेत दिया कि उपकरणों में से कोई एक ठीक से काम नहीं कर रहा है । इसे तुरंत सुधार लिया गया । इस बीच निचली रेंज केंद्र ने 'होल्ड' के लिए कहा । अगले कुछ सेकंडों में जगह-जगह 'होल्ड' की जरूरत पड़ गई । हमें प्रक्षेपण स्थगित करना पड़ा ।

❑ विद्यार्थियों से आत्मकथा के अंश का मुखर वाचन कराएँ । प्रश्नोत्तर के माध्यम से पाठ के प्रमुख मुद्दों पर चर्चा कराएँ । अंतरजाल के माध्यम से भारतीय वैज्ञानिकों और उनके कार्यों की सूची बनवाएँ । डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम की जीवनी पढ़ने के लिए प्रेरित करें ।

खोजबीन

अंतरजाल से पद्‌मभूषण से विभूषित विभूतियों की जानकारी का संकलन करके सुनाओ ।

मैं अपनी टीम के सदस्यों से मिलने गया, जो सदमे और शोक की हालत में थे । मैंने एस. एल. वी.-३ के अपने अनुभव को उनके साथ बाँटा- ''मेरा प्रक्षेपणयान तो गिरकर समुद्र में खो गया था लेकिन उसकी वापसी सफलता के साथ हुई । आपकी मिसाइल अभी तक आपके सामने है । वास्तव में आपने कुछ भी ऐसा नहीं खोया है, जिसे एक-दो हफ्तों के काम से सुधारा न जा सके ।'' इस विवरण ने उन्हें जड़ता की हालत से झकझोरकर बाहर निकाल लिया और सारी की सारी टीम उपप्रणालियों की जाँच और उन्हें ठीक करने के काम में फिर से जुट गई ।

अगले दस दिन तक दिन-रात चले विस्तृत विश्लेषण के बाद हमारे वैज्ञानिकों ने मिसाइल को एक मई उन्नीस सौ नवासी को प्रक्षेपण के लिए तैयार कर लिया । लेकिन स्वचलित कंप्यूटर जाँच अवधि के दौरान टी.-१० सेकंड पर एक 'होल्ड' का संकेत दिखाई पड़ा । प्रक्षेपण फिर एक बार स्थगित करना पड़ा । रॉकेट विज्ञान के क्षेत्र में इस तरह की चीजें बहुत आम हैं और अक्सर अन्य देशों में भी होती रहती हैं ।

मैंने डी. आर. डी. एल.- आर.सी.आई. परिवार के दो हजार से भी अधिक सदस्यों को संबोधित किया । ''बहुत मुश्किल से ही कभी किसी प्रयोगशाला या आर. एंड डी. संस्थान को देश में पहली बार 'अग्नि' जैसी प्रणाली विकसित करने का अवसर मिलता है । यह महान अवसर हमें दिया गया है । स्वाभाविक रूप से बड़े अवसर अपने साथ बराबर की चुनौतियाँ लेकर आते हैं । हमें हिम्मत नहीं हारनी चाहिए, समस्याओं को हमें हराने का मौका नहीं देना चाहिए । देश को हमसे सफलता से कम कुछ भी पाने का अधिकार नहीं है । आइए, सफलता को लक्ष्य बनाएँ ।'' अपना संबोधन लगभग खत्म कर चुका था कि मैंने लोगों को कहते हुए पाया, ''मैं आपसे वादा करता हूँ , महीने के खत्म होने के पहले ही 'अग्नि' का कामयाबी से प्रक्षेपण करने के बाद हम यहाँ वापस मिलेंगे ।'

यह किसी आश्चर्य से कम नहीं था कि कैसे सैकड़ों कर्मचारियों ने लगातार काम करके, प्रणाली की तैयारी का काम स्वीकार्यता परीक्षणों सहित केवल दस दिन में पूरा कर डाला लेकिन अब बाधाएँ पैदा करने की बारी विपरीत मौसम की थी । एक चक्रवात का खतरा मँड़रा रहा था । सभी कार्य केंद्र, उपग्रह संचार के जरिए आपस में जुड़े हुए थे । मौसम संबंधी आँकड़े रुक-रुककर आने लगे और दस मिनट के अंतराल में उनकी बाढ़-सी आ गई ।

अंततः प्रक्षेपण बाईस मई उन्नीस सौ नवासी के रोज निर्धारित किया गया । यह पूर्णिमा की रात थी । ज्वार के कारण लहरें किनारों से टकराकर और अधिक शोर मचा रही थीं । क्या हम 'अग्नि' के प्रक्षेपण में कल सफल होंगे ? यह सवाल हमारे दिमागों में सबसे ऊपर था लेकिन हममें से कोई भी उस सुंदर रात के जादू को खंडित करना नहीं चाहता था । एक लंबी खामोशी

❑ पाठ में आए सर्वनामवाले शब्दों को ढूँढ़कर विद्यार्थियों से उनकी सूची बनवाएँ और वाक्यों में प्रयोग करवाएँ । मैं, तुम, वह, से संबंधित अन्य शब्दों पर चर्चा करें । पाठ्‌यपुस्तक में आए अनुस्वार और अनुनासिक शब्दों का वाचन करके संग्रह बनवाएँ ।

सुनो तो जरा

विज्ञान प्रदर्शनी के लिए बनाए गए उपकरण बनाने की विधि एवं उपयोग सुनो और सुनाओ ।

तोड़ते हुए आखिरकार रक्षामंत्री महोदय ने मुझसे पूछा, ‘‘कलाम ! कल तुम ‘अग्नि’ की कामयाबी का जश्न मनाने के लिए मुझसे क्या उपहार चाहोगे ?’’

यह एक मामूली-सा सवाल था लेकिन मैं तत्काल इसका कोई भी जवाब नहीं सोच पाया । मैं क्या चाहता था? क्या था जो मेरे पास नहीं था ? कौन-सी चीज मुझे और खुशी दे सकती थी ? और तब, मुझे जवाब मिल गया । ‘‘हमें आर.सी.आई में लगाने के लिए एक लाख पौधों की जरूरत है’’, मैंने कहा । अगले दिन सुबह सात बजकर दस मिनट पर ‘अग्नि’ मिसाइल प्रज्वलित हो उठी । यह एक परिपूर्ण प्रक्षेपण था । सभी उड़ान मानक पूरे हुए । यह एक दुःस्वप्न भरी नींद के बाद एक खूबसूरत सुबह में जागने जैसा था । हम अनेक कार्य केंद्रों पर पाँच साल की कड़ी मेहनत के बाद लॉन्च पैड पर आए थे । पिछले पाँच हफ्तों में गड़बड़ियों की एक शृंखला की अग्निपरीक्षा से गुजरते रहे थे लेकिन अंततः हमने यह करके दिखा दिया !

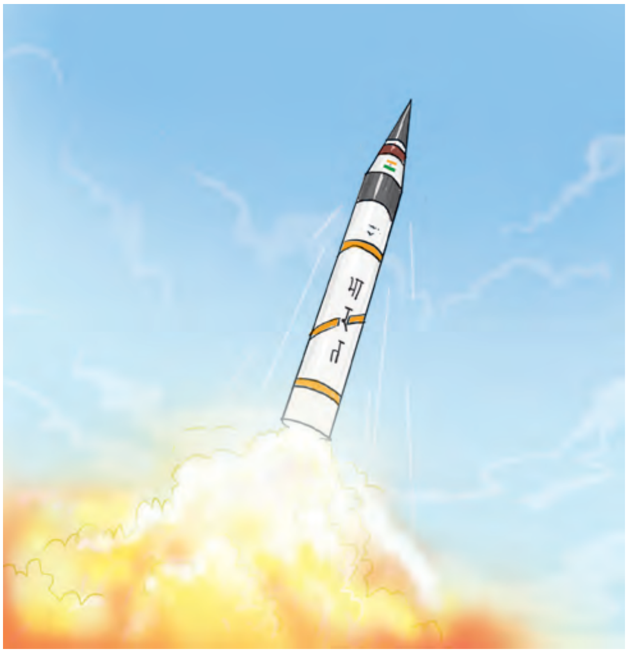

यह मेरे जीवन के महानतम क्षणों में से एक था । सिर्फ छह सौ सेकंड्स की भव्य उड़ान ने हमारी सारी थकान को एक पल में धो डाला । सालों की मेहनत का क्या शानदार नतीजा मिला !

www.isro.gov.in

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

युगांतरकारी = युग प्रवर्तक
आत्मनिर्भर = स्वावलंबी
चुनिंदा = चुना हुआ
अभूतपूर्व = अनोखा
गतिविधियाँ = कृतियाँ
सदमा = दुखद घटना का आघात
झकझोरना = झँझोड़ना
चक्रवात = बवंडर
अंतराल = बीच का समय
नतीजा = परिणाम

मुहावरा

दाँव पर लगाना = कुछ पाने के लिए बदले में कुछ लगाना

जरा सोचो .... चर्चा करो

यदि मैं अंतरिक्ष यात्री बन जाऊँ तो ....

विचार मंथन

।। हम विज्ञान लोक के वासी ।।

मेरी कलम से

दिए गए मुद्‌दों के आधार पर कहानी लिखो :

गाँव में मेला देखने वालों की भीड़ → सड़क पर प्रवेश द्‌वार के बीचोंबीच बड़ा-सा पत्थर → पत्थर से टकराकर छोटे-बड़ों का गिरना-पड़ना । → बहुत देर से लड़के का देखना

लड़के द्‌वारा पत्थर हटाना, उसके नीचे चिट्‌ठी पाना → चिट्‌ठी में लिखा था .... ? → पुरस्कार पाना । → सीख और शीर्षक

अध्ययन कौशल

अपना दैनिक नियोजन बनाओ तथा उसपर अमल करो ।

सदैव ध्यान में रखो

दैनिक जीवन में विज्ञान का उपयोग करना श्रेयस्कर होता है ।

१. सही विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखो :

(क) 'पृथ्वी' प्रक्षेपण के लिए ---- अंतरिक्ष केंद्र में विशेष सुविधाएँ स्थापित की । [थुंबा, श्रीहरिकोटा]

(ख) सिर्फ छह सौ ---- की भव्य उड़ान ने हमारी सारी थकान को एक पल में धो डाला । [मिनट, सेकंड्स]

२. तीन-चार वाक्यों में उत्तर लिखो :

(च) भारत को चुनिंदा राष्ट्रों के समूह में किसने पहुँचा दिया ?

(छ) टीम के साथ डॉ. कलाम जी ने कौन-सा अनुभव बाँटा ?

(ज) 'अग्नि' का प्रक्षेपण पहले स्थगित क्यों करना पड़ा ?

(झ) रक्षामंत्री ने डॉ. कलाम जी से कब और क्या पूछा था ?

भाषा की ओर

दाएँ पंख में उपसर्ग तथा बाएँ पंख में प्रत्यय लगाकर शब्द लिखो तथा उनके वाक्य बनाओ :

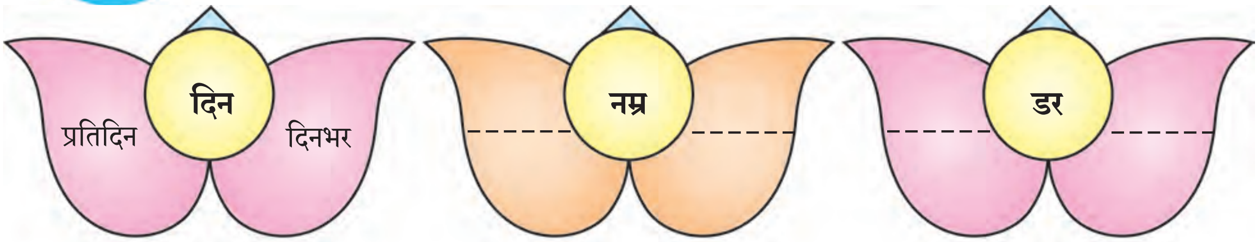

मैं प्रतिदिन खेलता हूँ । ---------------------- ----------------------

दिनभर नहीं खेलना चाहिए । ---------------------- ----------------------

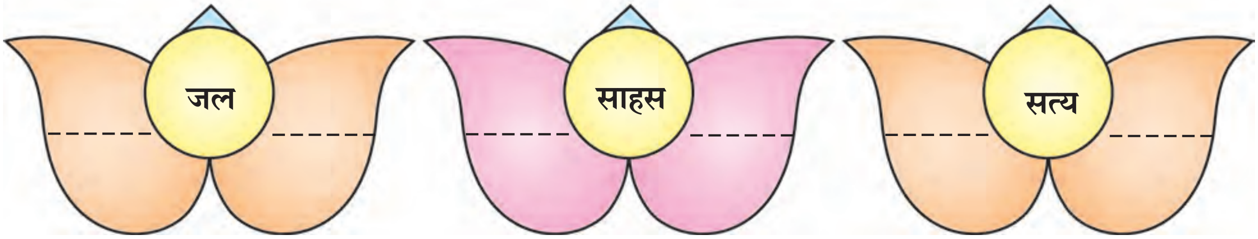

-------------------- ---------------------- ----------------------

-------------------- ---------------------- ----------------------

● **पढ़ो और समझो :**

७. जहाँ चाह, वहाँ राह

– अनुराधा मोहिनी

जन्म : २१ सितंबर १९६१, नागपुर (महाराष्ट्र) **परिचय :** अनुवाद के क्षेत्र में अनुराधा मोहिनी जी ने अमूल्य योगदान दिया है तथा आपने अनुवाद, विविध पारिभाषिक कोशों की निर्मिति में सहभाग, वैचारिक एवं ललित पुस्तकों का संपादन किया है ।

प्रस्तुत कहानी में लेखिका ने संकल्पशक्ति और उसके समुचित क्रियान्वयन से असंभव काम को संभव करने की प्रेरणा दी है ।

बताओ तो सही

स्वयं किए हुए कार्य
- घर
- परिवेश
- विद्‍यालय
- त्योहार

येसंबा गाँव के पाठशाला की घंटी बजी । धुआँधार बरसात हो रही थी । वर्षा के कारण प्रार्थना मैदान पर न होकर कक्षा में संपन्न हुई । उपस्थिति लेते हुए गुरु जी ने देखा कि आज कक्षा में बहुत कम विद्‍यार्थी हैं । ''आज इतने विद्‍यार्थियों के अनुपस्थित रहने का कारण क्या है ?'' उन्होंने विद्‍यार्थियों से पूछा । ''वही नाला, गुरु जी ।'' सबने एक स्वर में उत्तर दिया ।

येसंबा गाँव के ठीक बीच से एक नाला बहता था । गाँव की बस्ती नाले के एक तरफ थी, पाठशाला और खेत दूसरी तरफ थे । बरसात के दिनों में नाले में कई बार चार से पाँच फीट तक पानी भर जाता था । बड़े-बुजुर्ग तो किसी तरह अपने गाय-बैलों के साथ नाला पार कर

खेतों में चले आते किंतु पाठशाला आने के लिए नाला लाँघना विद्‍यार्थियों के लिए संभव नहीं था । जब-जब जोरों की बारिश होती उस दिन कक्षा में विद्‍यार्थियों की उपस्थिति पर असर पड़ता । अनेक बार विद्‍यार्थी पूरे सप्ताह पाठशाला नहीं जा पाते । इसके चलते 'गाँव में बरसात, नाले में भरा पानी-पाठशाला से छुट्‍टी, येसंबा की यही कहानी,' यह गीत गाँव में प्रचलित हो गया था ।

पाठशाला में अनुपस्थिति का विद्‍यार्थियों की पढ़ाई पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता । अच्छी श्रेणी लाने वाले विद्‍यार्थी भी वार्षिक परीक्षा में पीछे रह जाते । सब परेशान थे पर क्या करते ? मार्ग असंभव था ।

असंभव में मूल शब्द 'संभव' होता है । यही संभावना एक दिन एकाएक काम कर गई । हुआ यह कि उस दिन भारी वर्षा के कारण येसंबा के अधिकांश विद्‍यार्थी पाठशाला नहीं जा पाए थे । सो दोपहर बाद बरसात थोड़ी रुकने पर चौपाल में बरगद के पेड़ के नीचे चबूतरे पर बैठे वे आपस में बातचीत कर रहे थे । तभी तुषार ने कहा, ''अरे ! इस बरगद के पेड़ में भूत है । यहाँ क्यों बैठे हो ?'' ''भूत-वूत सब कोरी कल्पना और बकवास है । क्या हम में से किसी ने भूत देखा है ? सब केवल मनगढ़ंत बातें हैं'', जुई ने कहकर बातचीत आगे बढ़ाई । ''आज एक और अनुपस्थिति लग गई मेरी । अब तक चौदह अनुपस्थितियाँ हो चुकी इस बरसात में,''उज्ज्वला ने परेशानी भरे स्वर में

❑ कहानी का आदर्श वाचन करें । कुछ विद्‍यार्थियों से मुखर वाचन कराएँ । उनसे कहानी का मौन वाचन कराके अपने शब्दों में कहानी कहने के लिए कहें । नए शब्द समझाएँ । उनसे इसके किसी एक परिच्छेद का श्रुतलेखन कराके पाठ्‍यपुस्तक से जाँचने के लिए कहें ।

कहा । ''मेरी तो कुल उपस्थिति ही शायद चौदह होगी', शुभम ने कहा तो सब हँस पड़े। ''लेकिन क्या हम हर बरसात में ऐसे ही चर्चा करते रहेंगे और अपनी पढ़ाई का नुकसान होने देंगे ? क्या हम ऐसे ही हाथ पर हाथ धरे बैठे रहेंगे ।'' आशीष ने गंभीर स्वर में पूछा । ''हम कर भी क्या सकते हैं; हम तो बच्चें हैं ?'' तुषार ने कहा । ''सच कहा तुषार तूने, हम बच्चे कर भी क्या सकते हैं ?'' 'हम बच्चे कर भी क्या सकते हैं !' ...... इस वाक्य को गीत की तरह गाकर, एक साथ तालियाँ बजाकर वहाँ बैठे बच्चे जोर-जोर से हँसने लगे ।

''हँसो मत... ! कोई कुछ कर सकता है तो वह हम ही हैं,'' आत्मविश्वास भरा यह स्वर दामिनी का था। ''हर समस्या का निदान संभव है । प्रकृति ने विचार करने के लिए हमें बुद्‌धि दी है । मुझे विश्वास है कि हम सब मिलकर विचार करेंगे तो कोई न कोई रास्ता अवश्य मिलेगा । कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं

होती ।'' दामिनी की बातों ने बातचीत का माहौल बदल दिया । हर कोई गंभीर होकर समस्या के हल के बारे में सोचने लगा । ''हल मिल गया । हम बरसात में भी पाठशाला जा सकते हैं,'' आशीष की आँखों में चमक और स्वर में उत्साह था । ''कैसे?'' सबने एक साथ पूछा । ''हम नाले पर पुल बनाएँगे ।'', '' पुल.... !'' मित्रों के स्वर में आश्चर्य को भाँपकर आशीष ने आत्मविश्वासपूर्वक उत्तर देते हुए कहा, ''हाँ पुल । विज्ञान की पुस्तक में हम सबने पुल की जानकारी पढ़ी है । जब कभी शहर गए हैं, बड़े-बड़े पुल देखे भी हैं । अंतरजाल से हम जानकारी भी प्राप्त कर सकते हैं । गाँव का नाला बहुत ज्यादा चौड़ा नहीं है । हमें लगभग दस फीट का पुल बनाना होगा ।''

पुल बनाने का विचार जंगल की आग की तरह येसंबा गाँव में फैल गया । हर व्यक्ति इस विचार और विद्‌यार्थियों के हौसले की प्रशंसा कर रहा था ।

विद्‌यार्थियों ने छोटे-छोटे समूह बनाकर इस प्रकल्प की बारीकियों पर काम करना शुरू कर दिया । सामग्री की सूची बनाई । सामग्री खरीदने के लिए बीस-बीस रुपये एकत्रित करना आरंभ किया। अब तक पाठशाला के शिक्षक और गाँव के लोग भी सहायता के लिए आगे आ चुके थे । देखते-देखते सामग्री के लिए आवश्यक राशि जमा हो चुकी थी ।

बुजुर्गों का अनुभव, युवाओं की शक्ति, विद्‌यार्थियों का उत्साह सब साथ मिलकर काम कर रहे थे । संगठित प्रयासों से काम आकार लेने लगा था । सीमेंट के पाइप खरीदे गए । पत्थर इकट्ठे किए गए । ईंटे आईं । बंजर जमीन से मिट्टी खोदी गई । गाँव के छगनबाबा नामक एक बुजुर्ग ने प्रचुर मात्रा में रेत उपलब्ध करा दी । पुल बनाने के लिए पूरे गाँव के हाथ एक साथ मिट्टी का भराव करने लगे । हर दिन स्वप्नपूर्ति

❑ विद्‌यार्थियों को सुनी-पढ़ी साहस कथा को सुनाने के लिए प्रेरित करें । अंधविश्वासों पर चर्चा करें और वैज्ञानिक दृष्टिकोण बताएँ । कहानी में आए विरामचिह्न बताकर उनके नाम लिखने के लिए कहें । पाठ से हिंदी-मराठी समोच्चारित शब्दों की सूची बनवाएँ ।

वाचन जगत से

गणतंत्र दिवस पर सम्मानित बच्चों के बहादुरी के प्रसंग पढ़ो और पसंदीदा किसी एक का वर्णन करो ।

https://india.gov.in

की ओर एक-एक कदम बढ़ाने लगा था गाँव ।

अंततः आनंद की वह सुबह भी आ गई । वर्षों की कठिनाई दूर हुई । केवल पंद्रह दिनों में ग्रामीणों और विद्यार्थियों के सामूहिक श्रमदान से पुल बनकर तैयार हो चुका था । पूरे गाँव के लिए यह अद्‌भुत उपलब्धि थी । सभी ने एकता, संगठन और श्रमदान का महत्त्व भी समझा था ।

बरसात में इस बार भी नाले में पानी भरा था पर विद्‌यार्थी हँसते-खेलते पुल से पाठशाला की राह जाने लगे । पुल भी विद्‌यार्थियों के हौसले को दाद देता, मानो मन-ही-मन कह रहा था, 'जहाँ चाह, वहाँ राह।' जुई ने अपने बड़े भाई की सहायता से पुल के उद्‌घाटन का वृत्तांत बनाया और संगणक की सहायता से शिक्षा निरीक्षक के सामने प्रस्तुत किया ।

अनुवाद : संजय भारद्‌वाज

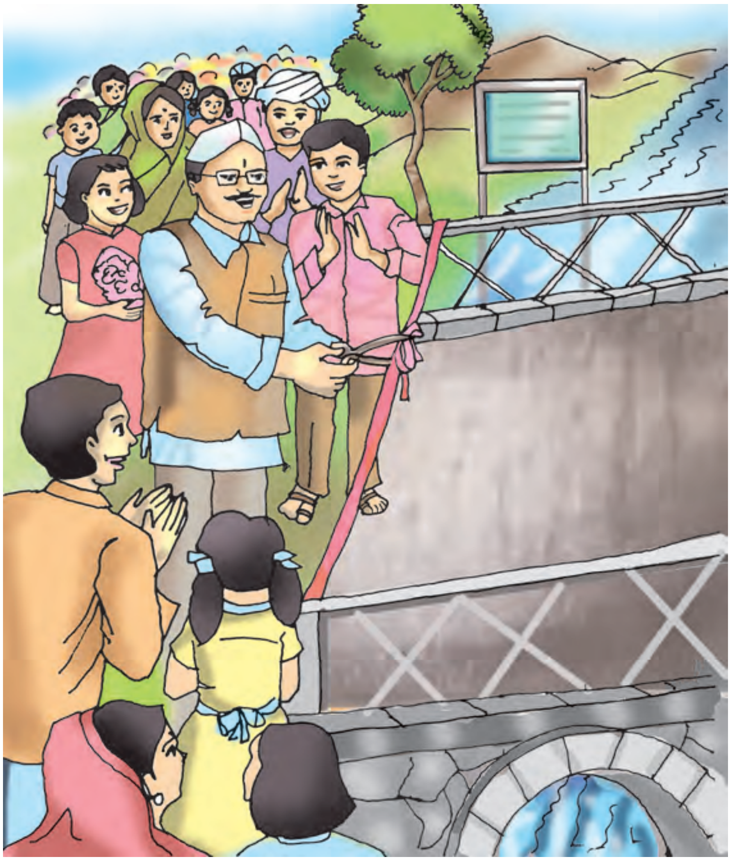

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

लाँघना = पार करना

असर = परिणाम

बकवास = व्यर्थ की बातें

निदान = समाधान

माहौल = वातावरण

हल = निराकरण

भाँपना = अंदाज लगाना

हौसला = हिम्मत

राशि = धन

प्रचुर = अधिक

कहावत

जहाँ चाह, वहाँ राह = इच्छा होने पर मार्ग मिलता है

खोजबीन

भारतीय सेना संबंधी जानकारी ढूँढ़ो और लिखो :

विभाग	पद	पोशाक	कार्य

अध्ययन कौशल

संदर्भ स्रोतों द्‌वारा निम्न रोगों से बचने के लिए दिए जाने वाले टीकों की जानकारी सुनो और संकलित करो :

रोग	टीका	रोग	टीका
तपेदिक(टीबी)	बी.सी.जी	टायफॉइड (मोतीझरा)	
डिप्थीरिया		रुबेला	
खसरा		हैपेटाइटिस ए	
रोटावायरस		टिटनस	

सामान्य विज्ञान ५ वीं कक्षा पाठ २३

सदैव ध्यान में रखो

दृढ़ संकल्पों से ही सपने साकार होते हैं ।

१. किसने किससे कहा है ?

(क) ''आज इतने विद्‌यार्थियों के अनुपस्थित रहने का कारण क्या है ?''

(ख) '' जब कभी शहर गए हैं, बड़े-बड़े पुल देखे भी हैं ।''

२. कहानी के शीर्षक की सार्थकता बताओ ।

३. आँखों देखी किसी घटना का वर्णन करो ।

४. इस कहानी का सारांश लिखो ।

भाषा की ओर

निम्नलिखित वाक्यों को पढ़ो और मोटे अक्षरों में छपे शब्दों पर ध्यान दो, पढ़कर उद्‌देश्य-विधेय अलग करके लिखो :

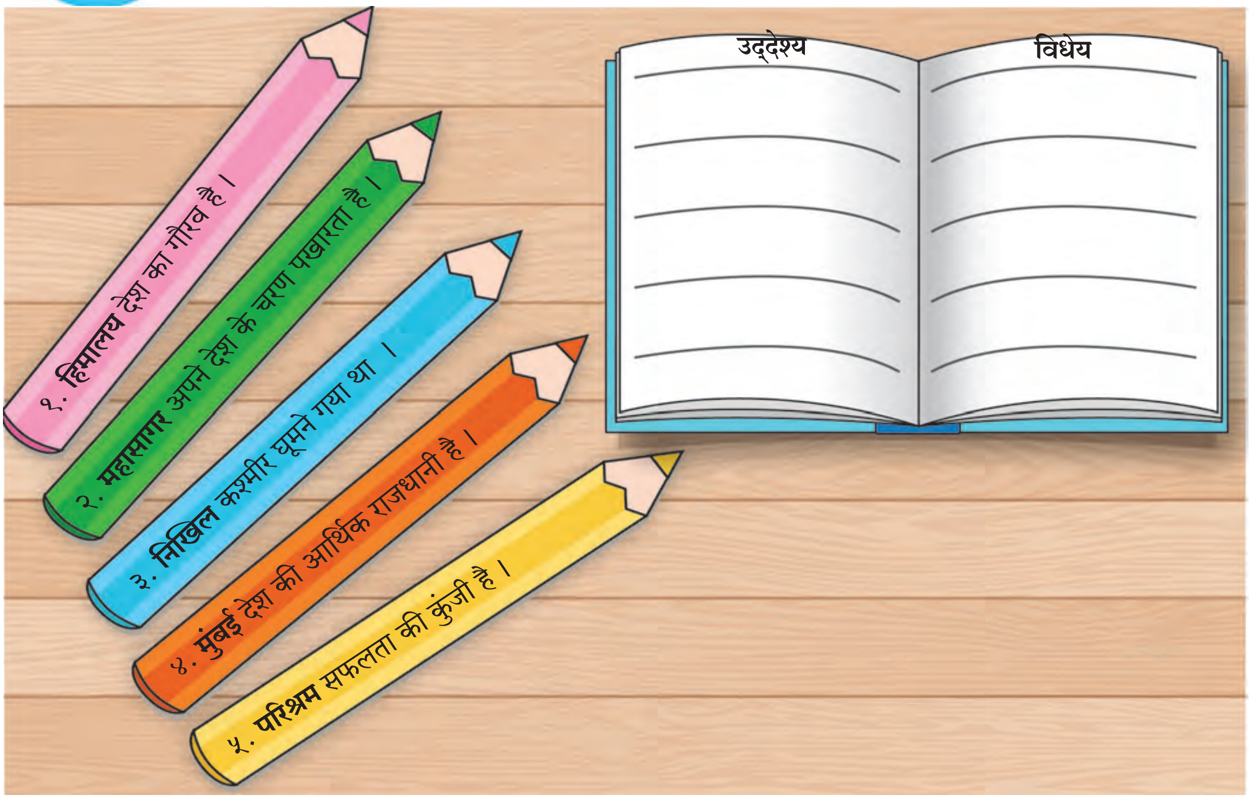

ऊपर के वाक्यों में **हिमालय, महासागर, निखिल, मुंबई, परिश्रम** इनके बारे में कहा गया हैं । वाक्य में जिसके बारे में कहा या बताया जाता है वह **उद्‌देश्य** होता है ।

ऊपर के वाक्यों में हिमालय के बारे में- **देश का गौरव है,** महासागर के बारे में- **अपने देश के चरण पखारता है,** निखिल के बारे में- **कश्मीर घूमने गया था,** मुंबई के बारे में-**देश की आर्थिक राजधानी है,** परिश्रम के बारे में-**सफलता की कुंजी है-** कहा गया है । उद्‌देश्य के बारे में जो कहा गया है वह **विधेय** है ।

● **पढ़ो, समझो और गाओ :**

८. जीवन नहीं मरा करता है

– गोपालदास सक्सेना 'नीरज'

जन्म : ४ जनवरी १९२४, पुरावली, इटावा (उ.प्र.) **रचनाएँ :** बादर बरस गयो, नीरज रचनावली, नीरज की गीतिकाएँ, दर्द दिया है ।
परिचय : पद्‌मभूषण गोपालदास सक्सेना 'नीरज' जी कवि सम्मेलनों के मंचों पर काव्य वाचक एवं विख्यात गीतकार हैं ।
प्रस्तुत कविता में कवि ने विविध उदाहरणों के माध्यम से जीवन की समस्याओं और इसकी शाश्वतता की ओर संकेत किया है ।

जरा सोचो .... चर्चा करो

यदि सूर्य प्रकाश न होता तो इनपर क्या प्रभाव पड़ता ?

- वनस्पति
- पशु-पक्षी
- मानव

छिप-छिप अश्रु बहाने वालो !
मोती व्यर्थ लुटाने वालो !
कुछ सपनों के मर जाने से जीवन नहीं मरा करता है ।

माला बिखर गई तो क्या है
खुद ही हल हो गई समस्या,
आँसू गर नीलाम हुए तो
समझो पूरी हुई समस्या,

रूठे दिवस मनाने वालो !
फटी कमीज सिलाने वालो !
कुछ दीपों के बुझ जाने से आँगन नहीं मरा करता है ।

खोता कुछ भी नहीं यहाँ पर
केवल जिल्द बदलती पोथी,
जैसे रात उतार चाँदनी
पहने सुबह धूप की धोती,

वस्त्र बदल कर आने वालो !
चाल बदल कर जाने वालो !
चंद खिलौनों के खोने से बचपन नहीं मरा करता है ।

❑ उचित हाव-भाव, लय-ताल के साथ कविता सुनाएँ । विद्यार्थियों से कविता का व्यक्तिगत, सामूहिक, गुट में गायन करवाएँ । प्रश्नोत्तर के माध्यम से कविता के भाव स्पष्ट करें । कविता की कौन-सी पंक्ति उन्हें अच्छी लगी, पूछें एवं कारण बताने हेतु प्रेरित करें ।

सुनो तो जरा

ई न्यूज, आकाशवाणी, दूरदर्शन एवं अन्य प्रसार माध्यमों आदि से समाचार पढ़ो/सुनो और मुख्य बातें सुनाओ ।

कितनी बार गगरियाँ फूटीं
शिकन न पर आई पनघट पर,
कितनी बार किश्तियाँ डूबीं
चहल-पहल वो ही है तट पर,
तम की उमर बढ़ाने वालो !
लौ की आयु घटाने वालो !
लाख करे पतझर कोशिश पर उपवन नहीं मरा करता है ।
लूट लिया माली ने उपवन
लुटी न लेकिन गंध फूल की,
तूफानों तक ने छेड़ा पर
खिड़की बंद न हुई धूल की,
नफरत गले लगाने वालो !
सब पर धूल उड़ाने वालो !
कुछ मुखड़ों की नाराजी से दर्पन नहीं मरा करता है ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

नीलाम होना = बिक जाना
जिल्द = पुस्तक का बाह्‌य आवरण
शिकन = सिलवट, चिंता
पनघट = वह स्थान जहाँ लोग पानी भरते हैं

मुहावरा

गले लगना = प्यार से मिलना

किश्ती = नाव
तम = अंधकार
पतझर = पत्ते झरने की ऋतु
मुखड़ा = चेहरा

अध्ययन कौशल

सौरऊर्जा पर टिप्पणी तैयार करो और पढ़ो :

सौरऊर्जा
- महत्व
- प्रयोग

www.seci.gov.in

मेरी कलम से

निम्नलिखित शब्द की सहायता से नए शब्द बनाओ :

दीप — दीपशिखा

विचार मंथन

।। जीवन चलता ही रहता ।।

सदैव ध्यान में रखो

कालचक्र निरंतर गतिमान है ।

१. निम्नलिखित पंक्तियों का अर्थ लिखो :

(क) 'लाख करे पतझर कोशिश पर उपवन नहीं मरा करता है ।'

(ख) 'कितनी बार गगरियाँ फूटीं शिकन न पर आई पनघट पर ।'

२. इस कविता का मुख्य आशय लिखो ।

३. जीवन की शाश्वतता को बताने वाली पंक्तियाँ लिखो ।

भाषा की ओर

पढ़ो, समझो और करो :

() छोटा कोष्ठक, [] बड़ा (वर्गाकार) कोष्ठक, {} मँझला (सर्पाकार) कोष्ठक, ^ हंसपद

छोटा कोष्ठक ()
क्रमसूचक अक्षर, अंक, संवादमय लेखों में हावभाव सूचित करने के लिए () इसका प्रयोग करते हैं ।

बड़ा (वर्गाकार) कोष्ठक []
लेखन में त्रुटि या पूर्ति बताने, दूसरे कोष्ठक को घेरने के लिए [] इसका प्रयोग करते हैं ।

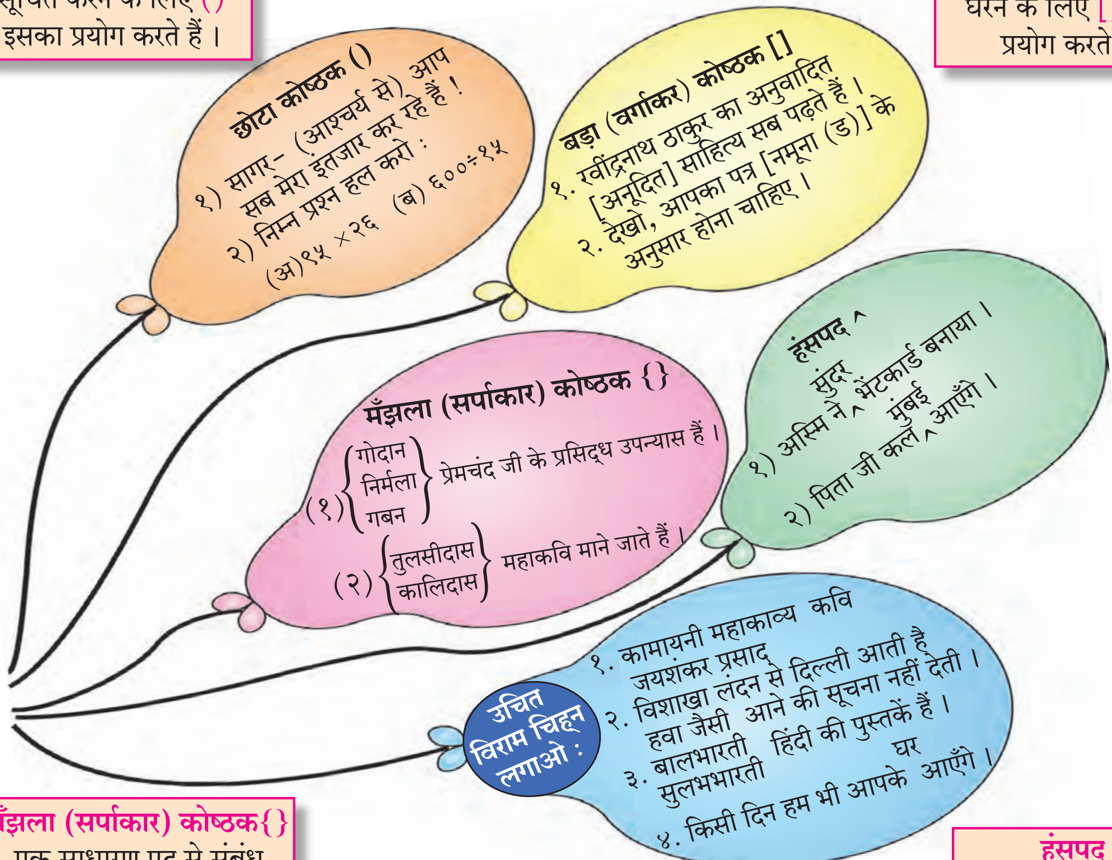

मँझला (सर्पाकार) कोष्ठक {}
एक साधारण पद से संबंध रखने वाले अलग-अलग पंक्तियों के शब्दों को मिलाने के लिए {} इसका प्रयोग करते हैं ।

हंसपद ^
लेखन में जब कोई शब्द छूट जाता है तब उसे पंक्ति के ऊपर लिखकर ^ यह चिह्न लगाते हैं ।

अभ्यास – १

✻ चित्र देखकर संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया आदि के भेदों के आधार पर उचित वाक्य बनाओ और तालिका में शब्द लिखो :

संज्ञा शब्द	सर्वनाम शब्द	विशेषण शब्द	क्रिया शब्द

पुनरावर्तन – १

१. शब्दों की अंत्याक्षरी खेलो: जैसे– शृंखला ..... लालित्य ..... यकृत ..... तरुवर ..... रम्य ..... ।

२. निम्न प्रकार से मात्रा एवं चिह्नवाले अन्य शब्द बताओ :

काला	बुलबुल	कृपाण	केले	प्रात:
रूमाल	नूपुर	खपरैल	खरगोश	लीची
चौदह	हृदय	चौकोर	पतंग	कुआँ
चिड़िया	पैसे	तितली	संख्याएँ	डॉक्टर

३. पूरी वर्णमाला क्रम से पढ़ो :

क्ष श य प त ट च क ए अ त्र ष र फ

थ ठ छ ख ऐ आ ज्ञ स ल ब घ ढ़ ई ऋ

द ड ज ग ओ इ श्र ह व भ ध ढ झ ऑ

ळ म न ण त्र ङ अं उ ड़ अ: ऊ अँ औ

४. अपने विद्यालय में आयोजित अंतरशालेय चित्रकला प्रदर्शनी का विज्ञापन बनाकर लिखो ।

उपक्रम

प्रतिदिन श्यामपट्ट पर सुंदर एवं सुडौल अक्षरों में हिंदी सुविचार लिखो ।

उपक्रम

प्रतिसप्ताह समाचारपत्र के मुख्य समाचारों का लिप्यंतरण करो और पढ़ो ।

उपक्रम

प्रतिमाह अपनी मातृभाषा के पाँच वाक्यों का हिंदी में अनुवाद करो और सुनाओ ।

प्रकल्प

अपने पसंदीदा विषय पर आधारित व्यक्तिगत अथवा गुट में प्रकल्प तैयार करो ।

● पहचानो, समझो और बताओ :

१. अस्पताल

❑ चित्र का निरीक्षण कराके विद्यार्थियों से शब्द, वाक्य पर चर्चा करें । अस्पताल में जाकर वहाँ दी गई जानकारी, सूचना पढ़ने एवं पालन करने के लिए कहें । दिए गए कक्ष और वहाँ के कार्यों के बारे में बताएँ । उनको चित्र के बारे में एक–दूसरे से प्रश्न पूछने के लिए कहें ।

● **पढ़ो और गाओ :**

२. बेटी युग

–आनंद विश्वास

जन्म : जुलाई १९४९, शिकोहाबाद (उ.प्र.) **रचनाएँ :** मिटने वाली रात नहीं, पर कटी पाँखी, देवम, गरमागरम थपेड़े लू के, चिड़िया फुर्र।
परिचय : आनंद विश्वास जी अंधविश्वास और मुश्किलों के ताप से पिघलते जीवन के प्रति विद्रोही स्वर रखने वाले कवि हैं ।
प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवि ने बेटियों की शिक्षा, महत्त्व के साथ-साथ उनकी आत्मनिर्भरता, प्रगति को प्रतिपादित किया है ।

अध्ययन कौशल

अपने विद्‌यालय के पाँचवीं से आठवीं तक की कक्षाओं में पढ़ रहे छात्र और छात्राओं की संख्या संयुक्त स्तंभालेख द्‌वारा दर्शाओ ।

गणित सातवीं कक्षा पृ. ५१-५२

नानी वाली कथा-कहानी, अब भी जग में लगे सुहानी ।
बेटी युग के नए दौर की, आओ लिख लें नई कहानी ।

बेटी युग में बेटा-बेटी,
सभी पढ़ेंगे, सभी बढ़ेंगे ।
फौलादी ले नेक इरादे,
खुद अपना इतिहास गढ़ेंगे ।
देश पढ़ेगा, देश बढ़ेगा, दौड़ेगी अब तरुण जवानी ।
नानी वाली कथा-कहानी, अब भी जग में लगे सुहानी ।

बेटा शिक्षित आधी शिक्षा,
दोनों शिक्षित पूरी शिक्षा ।
हमने सोचा, मनन करो तुम,
सोचो-समझो, करो समीक्षा ।
सारा जग शिक्षामय करना, हमने सोचा, मन में ठानी ।
नानी वाली कथा-कहानी, अब भी जग में लगे सुहानी ।

❑ कविता का आदर्श पाठ प्रस्तुत करके विद्यार्थियों से सस्वर पाठ कराएँ । गुट चर्चा एवं प्रश्नोत्तर के माध्यम से कविता में आए प्रमुख भावों को स्पष्ट करें और उनकी सूची बनवाएँ । 'लड़का-लड़की एक समान' विषय पर आठ से दस वाक्य लिखने के लिए प्रेरित करें ।

वाचन जगत से

पुण्यश्लोक अहिल्याबाई होळकर के कार्य पढ़ो और प्रमुख मुद्दे बताओ ।

अब कोई ना अनपढ़ होगा,
सबके हाथों पुस्तक होगी ।
ज्ञानगंगा की पावन धारा,
सबके आँगन तक पहुँचेगी ।
पुस्तक और कलम की शक्ति, जग जाहिर जानी पहचानी ।
नानी वाली कथा-कहानी, अब भी जग में लगे सुहानी ।

बेटी युग सम्मान पर्व है,
पुण्य पर्व है, ज्ञान पर्व है ।
सब सबका सम्मान करें तो,
जन-जन का उत्थान पर्व है ।
सोने की चिड़िया तब बोले, बेटी युग की हवा सयानी ।
नानी वाली कथा-कहानी, अब भी जग में लगे सुहानी ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

सुहानी = सुंदर
दौर = काल, समय
नेक = भला, अच्छा
इरादा = संकल्प
कलम = लेखनी
उत्थान = प्रगति
पर्व = त्योहार
सयानी = समझदार

मुहावरा

ठान लेना = निश्चय करना

सुनो तो जरा

त्योहार मनाने के उद्‌देश्य की वैज्ञानिकता सुनो और सुनाओ ।

जरा सोचो .... लिखो

तुम्हें रुपयों से भरा बटुआ मिल जाए तो .....

स्वयं अध्ययन

स्त्री शिक्षा का इनपर क्या प्रभाव पड़ता है, लिखो :

- स्वयं
- परिवार
- समाज
- देश

विचार मंथन

।। बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ ।।

सदैव ध्यान में रखो

स्वयं को बदलो, समाज बदलेगा ।

१. कविता की पंक्तियाँ पूरी करो :

(क) बेटी युग में ----, ---- । ----, ---- गढ़ेंगे ।।

(ख) बेटी युग ----, ---- । ----, ---- उत्थान पर्व है ।

२. जानकारी लिखो :

(च) बेटी पर्व

(छ) शिक्षामय विश्व

भाषा की ओर

निम्नलिखित शब्दों के युग्म शब्द बताओ और वाक्यों में उचित शब्दयुग्म लिखो :

गाँव– ...., ...–उधर, घूमना – ...., धन – ...., ... – पहचान, कूड़ा – ...., ... – फूल, घर – .... ।

धन – **दौलत**

१. अथक परिश्रम से उसने **धन–दौलत** कमाई ।

------ – ------

२. सेहत के लिए -------- अच्छा होता है ।

------ – ------

३. दीपावली में -------- मिठाइयाँ बनती हैं ।

------ – ------

४. अंतरजाल की सुविधा -------- में उपलब्ध है ।

------ – ------

५. बाजार से बहुत सारे -------- खरीदकर लाए ।

------ – ------

६. बच्चों ने मैदान पर फैला -------- इकट्ठा किया ।

------ – ------

७. समारोह में सभी ------- वालों को आमंत्रित किया ।

------ – ------

८. बगीचे में आते ही सभी बच्चे-------- दौड़ने लगे ।

● सुनो, समझो और सुनाओ :

३. दो लघुकथाएँ

प्रस्तुत कहानियों के द्‌वारा लेखक ने बीरबल की बुद्‌धिमानी और समस्या के निराकरण की उनकी क्षमता को दिखाया है ।

सुनो तो जरा

'चतुराई' संबंधी कोई सुनी हुई कहानी सुनाओ ।

(अ) हरा घोड़ा

अकबर और बीरबल के किस्से बहुत प्रसिद्‌ध हैं । अकबर एक महान शासक थे । बीरबल उनके नवरत्नों में से एक थे । एक बार अकबर, बीरबल के साथ अपने घोड़े पर बैठकर बगीचे की सैर कर रहे थे । चारों तरफ हरियाली को देखकर उनका मन प्रसन्न हो गया । बादशाह अकबर ने सोचा कि यदि मेरे पास हरे रंग का घोड़ा होता तो मैं उसपर बैठकर हरे-भरे स्थानों की सैर करता । बस फिर क्या था ? बादशाह अकबर ने बीरबल से कहा-''मैं तुम्हें एक सप्ताह का समय देता हूँ कि तुम मेरे लिए हरे रंग के घोड़े का प्रबंध करो ।'' बादशाह अकबर बीरबल की बुद्‌धिमानी की परीक्षा लेना चाहते थे इसलिए उन्होंने हरे रंग का घोड़ा लाने के लिए कहा था ।

बादशाह और बीरबल दोनों यह बात अच्छी तरह से जानते थे कि संसार में कहीं भी हरे रंग का घोड़ा नहीं होता । फिर भी बीरबल ने अकबर के आदेश को सिर-आँखों पर रख लिया ।

एक सप्ताह बीरबल इधर-उधर घूमते रहे और आठवें दिन दरबार में जाकर बोले- ''हुजूर ! आखिर आपके लिए मैंने हरा घोड़ा खोज ही लिया ।'' बादशाह अकबर के आश्चर्य का ठिकाना न रहा । वे सोचने लगे कि जब हरा घोड़ा होता ही नहीं तो बीरबल ने कैसे खोज लिया ? उन्हें विश्वास नहीं हुआ फिर भी उत्सुकता से कहा-''बीरबल ! हरा घोड़ा कहाँ है ? मैं उसे तुरंत ही देखना चाहता हूँ ।''

बीरबल ने उत्तर दिया-''हुजूर, घोड़ा मिल गया है पर हरे घोड़े के मालिक की दो शर्तें हैं इसलिए घोड़े को आप अभी नहीं देख सकते । आपको इंतजार करना पड़ेगा ।'' ''कैसी शर्तें ?'' बादशाह ने पूछा ।

बीरबल ने जवाब दिया-''पहली शर्त यह है कि बादशाह को घोड़ा लेने वहाँ स्वयं ही जाना पड़ेगा । दूसरी शर्त यह है कि हुजूर जब घोड़े का रंग दूसरे घोड़ों से अलग है तो घोड़े को देखने का दिन भी अलग ही होना चाहिए । यानि सप्ताह के सात दिनों के अलावा आप घोड़े को किसी भी दिन देख सकते हैं ।'' जब बादशाह ने बीरबल की दूसरी शर्त सुनी तो वे बीरबल का मुँह देखने लगे । उन्होंने मन-ही-मन सोचा 'सात दिनों से अलग कौन-सा दिन होगा ।' तब बीरबल बोले-''हुजूर, यदि आपको हरा घोड़ा चाहिए तो दोनों शर्तें माननी ही पड़ेगी ।'' बादशाह अकबर निरुत्तर हो गए । वे मन-ही-मन प्रसन्न थे कि बीरबल ने अपनी चतुराई से उन्हें फिर मात दे दी ।

❑ उचित हाव-भाव के साथ कहानी का मुखर वाचन करें । विद्‌यार्थियों से गुट में मुखर वाचन कराएँ । प्रश्नोत्तर के माध्यम से कहानी के प्रमुख मुद्‌दों को स्पष्ट करें । कक्षा में इस कहानी का नाट्‌यीकरण कराएँ । तेनालीराम की कहानियाँ पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें ।

खोजबीन

अंतरजाल से पारंपरिक चित्र शैली के प्रकार खोजो और लिखोः जैसे-वारली, मधुबनी आदि ।

राज्य का नाम

शैली का नाम

(ब) सेठ का चित्र

बहुत पहले की बात है । एक सेठ था । वह बहुत ही कंजूस था । एक दमड़ी भी खर्च करते समय उसके प्राण निकल जाते थे । वह काम कराने के बाद भी लोगों को पैसे देने में परेशान करता था । एक बार उसने एक चित्रकार से अपना चित्र बनवाया । जब चित्रकार ने पैसे माँगे तो सेठ ने कह दिया-''चित्र ठीक नहीं है, दोबारा बनाकर लाओ ।'' चित्रकार ने कई बार चित्र बनाए, लेकिन वह कंजूस सेठ हर बार कह देता कि चित्र ठीक नहीं है । क्रोधित होकर उस चित्रकार ने सेठ से सभी चित्रों के पैसों का तकादा कर लिया । धूर्त सेठ बोला-''कैसे पैसे, जब मेरा चित्र ठीक से बना ही नहीं तो मैं पैसे किस बात के दूँ ?'' बेचारा चित्रकार अपने घर लौट आया । परेशानी का कारण पूछने पर उसने अपनी पत्नी को सारी बातें बताई । चित्रकार की पत्नी बहुत

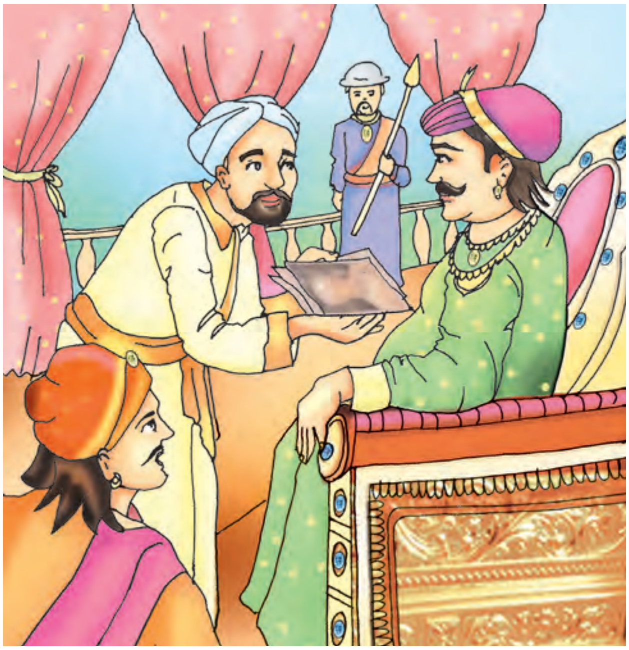

बुद्धिमान थी । वह बोली-''आप दरबार में जाकर न्याय के लिए फरियाद कीजिए ।'' चित्रकार बहुत उदास हो गया था । वह मुँह लटकाकर बैठ गया । बोला, ''सेठ बड़ा आदमी है । लोग उसी की बात को सच मानेंगे । भला मुझ जैसे गरीब का साथ कौन देगा ?'' चित्रकार की पत्नी बोली, ''सबके बारे में ऐसा नहीं कह सकते । बादशाह अकबर बहुत दयालु हैं । वे भले ही पढ़े-लिखे नहीं है परंतु बड़े बुद्धिमान हैं । उनकी सहायता के लिए दरबार में नौ-नौ रत्न हैं । आप वहाँ जाइए । आपको न्याय जरूर मिलेगा ।''

दूसरे दिन चित्रकार बादशाह अकबर के दरबार में गया और पूरा किस्सा सुना दिया । बादशाह अकबर ने चित्रों को लेकर सेठ को दरबार में बुलवा लिया । बादशाह ने सभी चित्रों को गौर से देखकर कहा-''तुम्हारे इन चित्रों में क्या कमी है ?''

''हुजूर, इनमें से एक भी चित्र हू-ब-हू मेरे चेहरे जैसा नहीं है,'' सेठ ने कहा ।

बादशाह मुश्किल में पड़ गए कि न्याय कैसे करें ? बड़ी देर तक विचार करते रहे । जब उन्हें कुछ समझ में नहीं आया तो बीरबल से न्याय करने को कहा । बीरबल ने सारी बातें ध्यान से सुनीं और तुरंत समझ गए कि सेठ चेहरा बदलने में निपुण है । चित्रकार को पैसे न देने पड़ें इसलिए वह नाटक कर रहा है । उसको सही रास्ते पर लाना जरुरी है । कला और कलाकार का सम्मान करने से कला, संस्कृति की रक्षा एवं संवर्धन होता है । कला में निपुण कलाकारों की इज्जत जहाँ होती है वह देश विश्व में विख्यात होता है इसलिए बीरबल ने चित्रकार

- विद्यार्थियों को उनके दादा, दादी, भाई-बहन को कहानी सुनाने के लिए प्रोत्साहित करें । इन कहानियों में बीरबल की जगह यदि विद्यार्थी होते तो क्या करते, बताने के लिए प्रेरित करें । उन्हें कौन-सी कहानी अधिक पसंद आई और क्यों, सकारण पूछें । कहानी में आए एकवचनवाले और बहुवचनवाले तथा स्त्रीलिंग और पुल्लिंग शब्दों की सूची बनाकर उनका वाक्यों में प्रयोग करवाएँ ।

विचार मंथन

॥ सत्यमेव जयते ॥

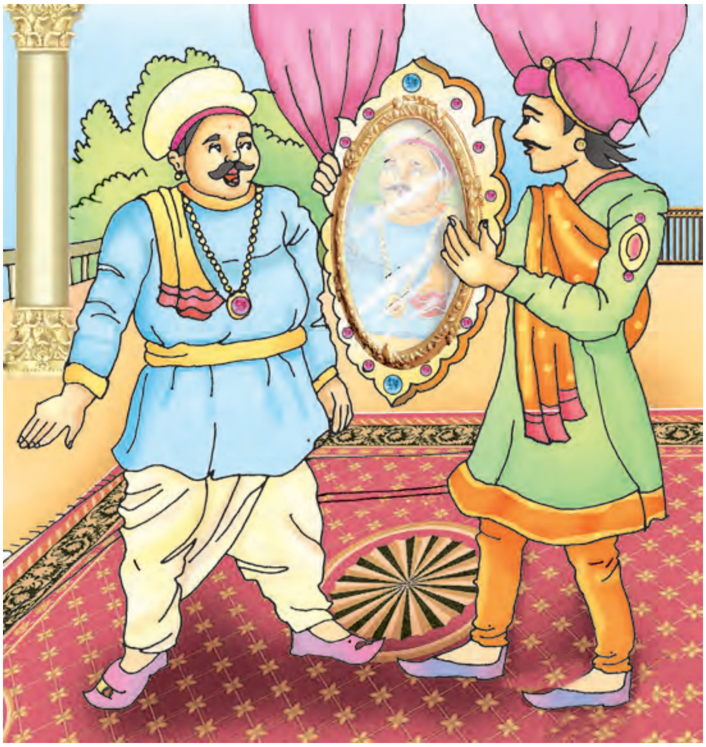

से कहा-''तुम्हारे चित्रों में सचमुच बहुत कमियाँ हैं। तीन दिन बाद इस सेठ का हू-ब-हू चित्र बनाकर दरबार में ले आना। तुम्हें पैसे मिल जाएँगे और सेठ तुम भी दरबार में आकर चित्रकार को पैसे दे देना।'' सेठ घर चला गया। बीरबल ने चित्रकार से कहा- ''तीन दिन बाद तुम दरबार में एक बड़ा-सा दर्पण लेकर उपस्थित हो जाना।''

तीन दिन बाद चित्रकार दरबार में आया और सेठ के सामने दर्पण रखकर बोला-''सेठ जी आपका चित्र तैयार है।'' सेठ अपना प्रतिबिंब देखकर बोला, ''परंतु यह तो दर्पण है।''

''नहीं, यही तो असली चित्र है।''

बीरबल ने पूछा-''सेठ जी, यह तो तुम्हारा ही रूप है, है या नहीं ?''

सेठ बोला-''जी हाँ।''

सेठ अपनी चालाकी पकड़े जाने पर बहुत लज्जित हुआ उसने चित्रकार को उसका मेहनताना दे दिया। चित्रकार सभी को धन्यवाद देकर चला गया। बीरबल के न्याय से बादशाह अकबर बहुत खुश हुए। बादशाह अकबर की प्रत्येक समस्या का समाधान बीरबल अपनी बुद्धिमानी से फटाफट कर देते थे। यहाँ भी बीरबल ने दूध का दूध और पानी का पानी कर दिखाया था।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

फरियाद = याचना, प्रार्थना

किस्सा = कहानी

हू-ब-हू = जैसे-का-वैसा

मेहनताना = पारिश्रमिक

कहावत

दूध का दूध, पानी का पानी करना =सही न्याय करना

मुहावरे

सिर आँखों पर रखना = स्वीकार करना

मात देना = पराजित करना

मुँह लटकाना = उदास होना

अध्ययन कौशल

किसी नियत विषय पर भाषण देने हेतु टिप्पणी बनाओ :

प्रस्तावना → विषय प्रवेश → उद्धरण, सुवचन → स्व मत

बताओ तो सही

अकबार के नौ रत्नों के बारे में बताओ ।

वाचन जगत से

पसंदीदा चित्रकथा पढ़ो और इसी प्रकार अन्य चित्रकथा बनाकर सुनाओ ।

सदैव ध्यान में रखो

निर्णय से पहले पक्ष-विपक्ष दोनों का विचार करना चाहिए ।

१. सही विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखो :

(क) जब बादशाह ने बीरबल की दूसरी शर्त सुनी तो वे बीरबल ------।

१. से खुश हो गए । २. का मुँह देखने लगे । ३. की होशियारी जान चुके ।

(ख) क्रोधित होकर उस चित्रकार ने सेठ से ------।

१. पैसे माँगे । २. पूरे पैसे माँगे । ३. सभी चित्रों के पैसे माँगे ।

२. चित्रकार की परेशानी का कारण बताओ ।

३. 'हरे घोड़े' के संदर्भ में बीरबल की चतुराई का वर्णन करो ।

४. घोड़े के मालिक की शर्तें लिखो ।

भाषा की ओर

निम्नलिखित वाक्य पढ़ो तथा मोटे और ( ) में छपे शब्दों पर ध्यान दो :

१. राघव ने **चुपचाप** घर में प्रवेश किया ।

२. लतिका **अभी** सोई है ।

३. माँ **आज** अस्पताल जाएगी ।

४. मेरा गाँव **यहाँ** बसा है ।

५. गाड़ी **धीरे-धीरे** चल रही थी ।

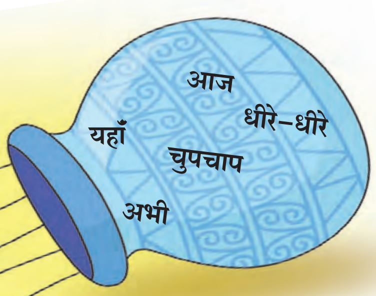

उपर्युक्त वाक्यों में **चुपचाप, अभी, आज, यहाँ, धीरे-धीरे** ये शब्द क्रमशः प्रवेश करना, सोना, जाना, बसना, चलना इन क्रियाओं की विशेषता बताते हैं । ये शब्द **क्रियाविशेषण अव्यय** हैं ।

१. नागपुर से रायगढ़ (की ओर) गए ।

२. ताकत (के लिए) संतुलित आहार आवश्यक है ।

३. जन्म (के बाद) एक मामी जी ने मुझे गोद ले लिया ।

४. जलाशय चाँदी (की भाँति) चमचमा रहा था ।

५. शौनक बड़ी बहन (के साथ) विद्‌यालय जाने की तैयारी में लग गया।

उपर्युक्त वाक्यों में **की ओर, के लिए, के बाद, की भाँति, के साथ** ये क्रमशः नागपुर और रायगढ़, ताकत और संतुलित आहार, जन्म और मामी जी, जलाशय और चाँदी, बड़ी बहन और विद्‌यालय इनके बीच संबंध दर्शाते हैं । ये शब्द **संबंधबोधक अव्यय** हैं ।

● **पढ़ो, समझो और लिखो :**

४. शब्द संपदा

– डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे

जन्म : ७ अगस्त १९४२, गुलबर्गा (कर्नाटक) **रचनाएँ :** लगभग ६५ पुस्तकें – अनुवाद का समाज शास्त्र तथा हिंदी कथा साहित्य और देश विभाजन उल्लेखनीय हैं। **परिचय :** डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे जी प्राध्यापक, उत्कृष्ट लेखक, अनुवादक, समीक्षक के रूप में जाने जाते हैं।
प्रस्तुत निबंध के माध्यम से लेखक ने शब्दों की शक्ति को दिखाते हुए इनकी संपदा को बढ़ाने के लिए जागरूक किया है।

स्वयं अध्ययन

वाणी कैसी होनी चाहिए, बताओ।

------- ------- ------- ------- -------

आदिम अवस्था से आधुनिक मनुष्य तक की विकास यात्रा का रहस्य किसमें है, क्या इसका तुम्हें पता है? अधिकांश लोग इसका उत्तर देते हैं कि अन्य प्राणियों की तुलना में मनुष्य का विकसित मस्तिष्क इस पूरी प्रगति व संस्कृति के मूल में है। यह उत्तर अपूर्ण है। पूर्ण उत्तर यह है कि मनुष्य की प्रगति हुई, वह इसलिए कि इस मस्तिष्क ने भाषा की खोज की। भाषा ही सभी प्रगति की जड़ में है। दुनिया की सभी ज्ञानशाखाओं का विकास हुआ– भाषा के कारण। 'भाषा' का अर्थ है–सार्थक शब्दों का व्यवस्थित–क्रमबद्‌ध संयोजन।

शब्दों का यह संसार बड़ा विचित्र है। शब्दों की ताकत की ओर हमारा ध्यान कभी नहीं जाता। शब्द ही मनुष्य को ज्ञान से जोड़ते हैं। शब्द ही मनुष्य को मनुष्य से जोड़ते हैं और शब्द ही मनुष्य को मनुष्य से तोड़ते हैं। विज्ञान की दृष्टि से तो अक्षर ध्वनि के चिह्न हैं, निर्जीव हैं। मनुष्य ही उन्हें अर्थ देता है, जीवंत बनाता है। जब शब्द जीवंत हो जाते हैं तो फिर उनमें मनुष्य के विविध स्वभाव, गुण आने लगते हैं। मनुष्य स्वभाव के जितने विभिन्न नमूने हैं, उतने ही शब्दों के स्वभाव के नमूने हैं। जैसे कुछ लोग औरों को हँसाने का काम करते हैं, वैसे ही कुछ शब्द भी लोगों को हँसाते हैं। जैसे कुछ मनुष्य औरों को हमेशा तकलीफ देते हैं; वैसे कुछ शब्दों के उच्चारण मात्र से सामनेवाला व्यक्ति व्यथित हो जाता है।

कई बार तो ऐसे शब्दों को सुनकर वह रोने भी लगता है। कुछ लोग बड़े प्रिय होते हैं; वैसे ही कुछ शब्द भी बहुत प्रिय होते हैं। उन्हें बार–बार सुनने की, गुनगुनाने की इच्छा होती है। एक ओर कुछ शब्द धोखा देने वाले होते हैं, कुछ निरर्थक होते हैं तो दूसरी ओर कुछ शब्द बहुत सज्जन, सात्त्विक, सभ्य और सुसंस्कृत होते हैं। कुछ शब्द निष्क्रिय बना देते हैं कि, 'कुछ मत करो जो भाग्य में है, वह तो मिल ही जाएगा। नहीं है,

❑ उचित आरोह–अवरोह के साथ निबंध का मुखर वाचन कराएँ। पाठ में आए प्रमुख मुद्‌दों पर प्रश्नोत्तर के माध्यम से चर्चा कराएँ। 'बातै हाथी पाइए, बातै हाथी पाँव' पर लेखन पूर्व चर्चा करवाकर दस वाक्य लिखने के लिए प्रेरित करें। विद्‌यार्थियों का मार्गदर्शन करें।

सुनो तो जरा

'भारत के संविधान की उद्‌देशिका' सुनो और दोहराओ ।

तो नहीं मिलेगा ।' न्यूटन ने कहा है कि किसी भी काम की सफलता के लिए ९०% (नब्बे प्रतिशत) परिश्रम की, ५% (पाँच प्रतिशत) बुद्‌धि की और ५% (पाँच प्रतिशत) संयोग की जरूरत होती है । परंतु याद रखें, किसी भी काम को पूर्णत्व देने के लिए ९०% (नब्बे प्रतिशत) कठोर परिश्रम की जरूरत होती है । ऐसे शब्द, जो हमें निष्क्रिय करते रहते हैं; उन्हें हमें अपने जीवन व्यवहार से निकाल बाहर करना चाहिए ।

कुछ भाषाओं के शब्द किसी भी अन्य भाषा से मित्रता कर लेते हैं और उन्हीं में से एक बन जाते हैं । जैसे आपके मित्रों में से कुछ ऐसे हैं; जो सबसे घुलमिल सकते हैं । कुछ ऐसे होते हैं कि वे औरों से मित्रता नहीं कर पाते । शब्दों का भी ऐसा ही स्वभाव होता है; विशेषकर अंग्रेजी भाषा के कई शब्द जिस किसी प्रदेश में गए, वहाँ की भाषाओं में घुलमिल गए । जैसे- 'बस, रेल, कार, रेडियो, स्टेशन' आदि । कहा जाता है कि तमिळ भाषा के शब्द केवल अपने परिवार द्रविड़ परिवार तक ही सीमित रहते हैं । वे किसी से घुलना, मिलना नहीं चाहते । अलबत्ता हिंदी के शब्द मिलनसार हैं परंतु सब नहीं; कुछ शब्द तो अंत तक अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाए रखते हैं । अपने मूल रूप में ही वे अन्य स्थानों पर जाते हैं । कुछ शब्द अन्य भाषा के साथ इस प्रकार जुड़ जाते हैं कि उनका स्वतंत्र रूप खत्म-सा हो जाता है ।

हिंदी में कुछ शब्द ऐसे भी पाए जाते हैं जो दो भिन्न भाषाओं के शब्दों के मेल से बने हैं । अब वे शब्द हिंदी के ही बने हैं । जैसे- हिंदी-संस्कृत से वर्षगाँठ, माँगपत्र; हिंदी-अरबी/फारसी से थानेदार, किताबघर; अंग्रेजी-संस्कृत से रेलयात्री, रेडियो तरंग;

अरबी/फारसी-अंग्रेजी से बीमा पॉलिसी आदि । इन शब्दों से हिंदी का भी शब्द संसार समृद्‌ध हुआ है । कुछ शब्द अपनी माँ के इतने लाड़ले होते हैं कि वे माँ- मातृभाषा को छोड़कर औरों के साथ जाते ही नहीं । कुछ शब्द बड़े बिंदास होते हैं, वे किसी भी भाषा में जाकर अपने लिए जगह बना ही लेते हैं ।

शब्दों के इस प्रकार बाहर जाने और अन्य अनेक भाषाओं के शब्दों के आने से हमारी भाषा समृद्ध होती है । विशेषतः वे शब्द जिनके लिए हमारे पास प्रतिशब्द नहीं होते । ऐसे हजारों शब्द जो अंग्रेजी, पुर्तगाली, अरबी, फारसी से आए हैं; उन्हें आने दीजिए । जैसे- ब्रश, रेल, पेंसिल, रेडियो, कार, स्कूटर, स्टेशन आदि । परंतु जिन शब्दों के लिए हमारे पास सुंदर शब्द हैं, उनके लिए अन्य भाषाओं के शब्दों का उपयोग नहीं होना चाहिए । हमारे पास 'माँ' के लिए, पिता के लिए सुंदर शब्द हैं, जैसे- माई, अम्मा, बाबा, अक्का, अण्णा, दादा, बापू आदि । अब उन्हें छोड़ मम्मी-डैडी कहना अपनी भाषा के सुंदर शब्दों को अपमानित करना है ।

- पाठ में आए हिंदीतर भाषा के शब्द खोजकर भाषानुसार उनका वर्गीकरण कराएँ । दैनिक बोलचाल में प्रयुक्त होने वाले अन्य भाषाओं के ज्ञात शब्दों की सूची बनाने के लिए विद्‌यार्थियों को प्रेरित करें । इन शब्दों के हिंदी समानार्थी शब्दों पर चर्चा करें और कराएँ । संचार माध्यमों (दूरदर्शन, भ्रमणध्वनि, अंतरजाल) में प्रयुक्त होने वाले अंग्रेजी और उनके हिंदी शब्दों की सूची बनवाएँ । हिंदी शब्दों के प्रयोग करने हेतु प्रेरित करें । भ्रमणध्वनि पर गूगल में कहानी पढ़ने के लिए कौन-कौन-सी प्रक्रिया करनी पड़ेगी, चर्चा करें ।

जरा सोचो .... चर्चा करो

यदि तुम पशु-पक्षियों की बोलियाँ समझ पाते तो ...

हमारे मुख से उच्चरित शब्द हमारे चरित्र, बुद्धिमत्ता, समझ और संस्कारों को दर्शाते हैं इसलिए शब्दों के उच्चारण के पूर्व हमें सोचना चाहिए । कम-से-कम शब्दों में अर्थपूर्ण बोलना और लिखना एक कला है । यह कला विविध पुस्तकों के वाचन से, परिश्रम से साध्य हो सकती है । मात्र एक गलत शब्द के उच्चारण से वर्षों की दोस्ती में दरार पड़ सकती हैं । अब किस समय, किसके सामने, किस प्रकार के शब्दों का प्रयोग करना चाहिए इसे अनुभव, मार्गदर्शन, वाचन और संस्कारों द्‌वारा ही सीखा जा सकता है । सुंदर, उपयुक्त और अर्थमय शब्दों से जो वाक्य परीक्षा में लिखे जाते हैं उस कारण ही अच्छी श्रेणी प्राप्त होती है । अनाप-शनाप शब्दों का प्रयोग हमेशा हानिकारक होता है ।

प्रत्येक व्यक्ति के पास स्वयं की शब्द संपदा होती है । इस शब्द संपदा को बढ़ाने के लिए साहित्य के वाचन की जरूरत होती है । शब्दों के विभिन्न अर्थों को जानने के लिए शब्दकोश की भी जरूरत होती है ।

शब्दकोश का एक पन्ना रोज एकाग्रता से पढ़ोगे तो शब्द संपदा की शक्ति का पता चल जाएगा ।

तो अब तय करो कि अपनी शब्द संपदा बढ़ानी है। इसके लिए वाचन-संस्कृति को बढ़ाओ । पढ़ना शुरू करो । तुम भी शब्द संपदा के मालिक हो जाओगे ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

तकलीफ = परेशानी

निष्क्रिय = कृतिहीन

मिलनसार = मिल-जुलकर रहनेवाले

मुहावरे

दरार पड़ना = दूरी बढ़ना

अनाप-शनाप बोलना = निरर्थक बातें करना

विचार मंथन

।। कथनी मीठी खाँड़-सी ।।

सदैव ध्यान में रखो

शब्दों का प्रयोग सावधानी से करना चाहिए ।

खोजबीन

हजारी प्रसाद द्‌विवेदी की 'कबीर ग्रंथावली' से पाँच दोहे ढूँढ़कर सुंदर अक्षरों में लिखो ।

अध्ययन कौशल

जानकारी प्राप्त करने के विविध संदर्भ स्रोतों के बारे में पढ़ो और उनका संकलन करो ।

१. तीन-चार वाक्यों में उत्तर लिखो :

(क) 'भाषा' का क्या अर्थ है, इसके कारण क्या हुआ है ?

(ख) भाषा समृद्ध कैसे होती है ?

२. शब्दों के बारे में लेखक के विचार बताओ ।

३. भाषा समृद्‌धि के कारण लिखो ।

४. वाचन-संस्कृति बढ़ाने से होने वाले लाभ लिखो ।

भाषा की ओर

नीचे दिए गए वाक्य पढ़ो और उपयुक्त शब्द उचित जगह पर लिखो :

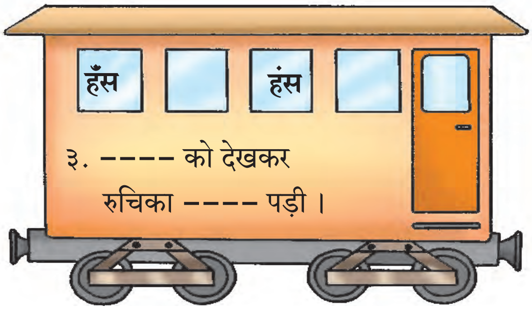

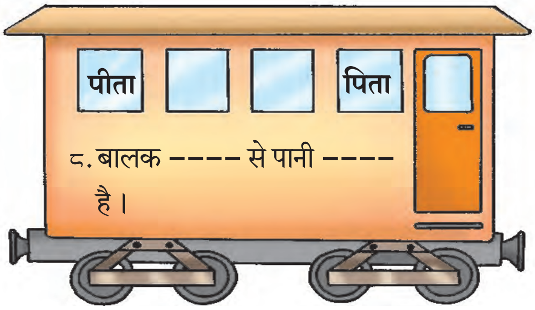

● सुनो, पढ़ो और गाओ :

५. बसंत गीत

– चंद्रप्रकाश 'चंद्र'

जन्म : ३.अक्टूबर १९५७, बुलंदशहर (उ.प्र.) **रचनाएँ** : खयाल ऊपर और ऊपर (लघुकथा), टेलीफिल्म, गीत, बालगीत आदि ।
परिचय : चंद्रप्रकाश 'चंद्र' जी कवि, लेखक, निर्देशक, अभिनेता, बहुप्रतिभा के धनी हैं । आपने विविध पत्र-पत्रिकाओं में लेखन किया है ।
प्रस्तुत गीत में कवि ने वसंत ऋतु में होने वाले परिवर्तन, प्रभाव और प्राणियों में फैले उल्लास को दर्शाया है ।

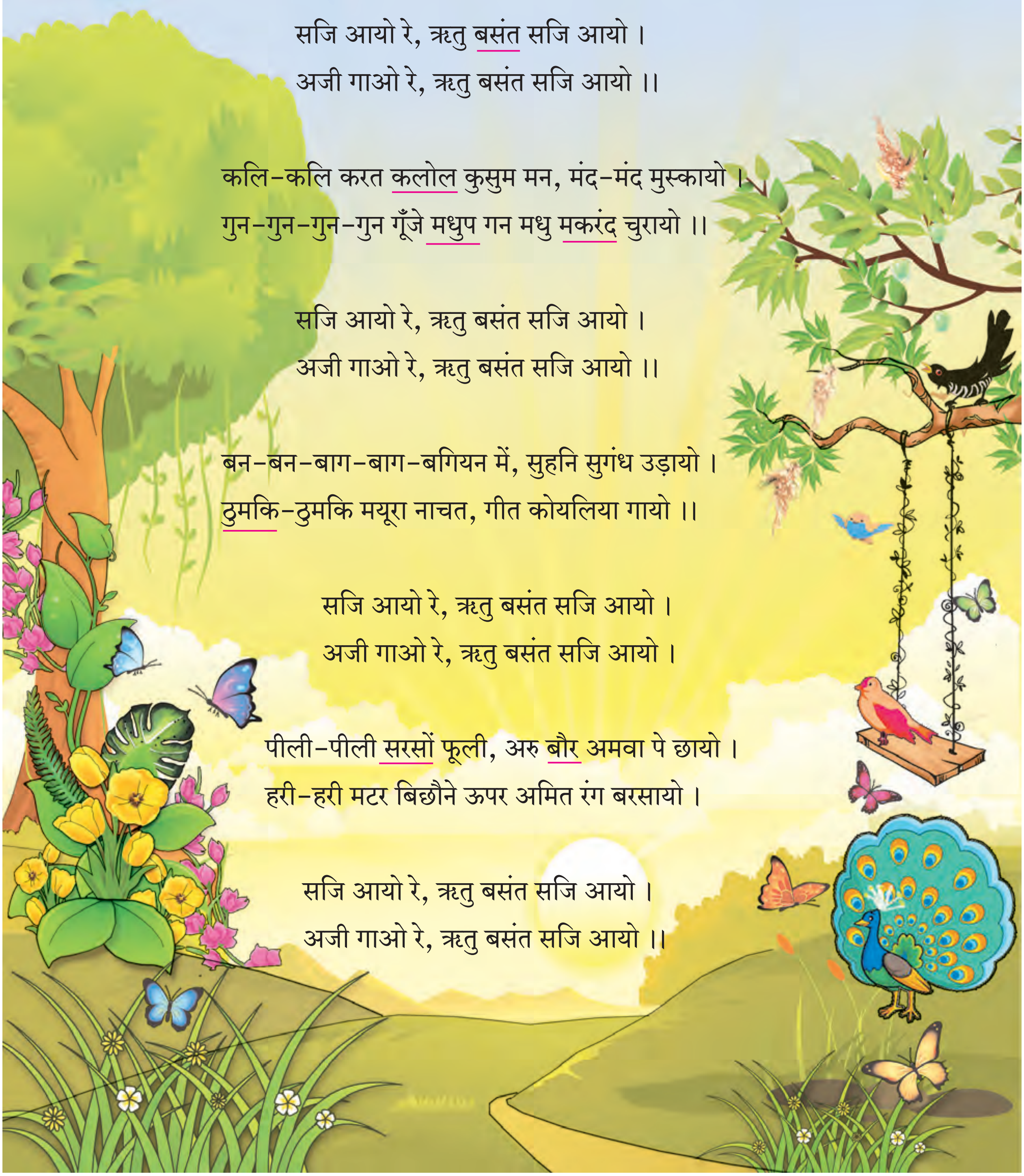

सजि आयो रे, ऋतु बसंत सजि आयो ।
अजी गाओ रे, ऋतु बसंत सजि आयो ।।

कलि-कलि करत कलोल कुसुम मन, मंद-मंद मुस्कायो ।
गुन-गुन-गुन-गुन गूँजे मधुप गन मधु मकरंद चुरायो ।।

सजि आयो रे, ऋतु बसंत सजि आयो ।
अजी गाओ रे, ऋतु बसंत सजि आयो ।।

बन-बन-बाग-बाग-बगियन में, सुहनि सुगंध उड़ायो ।
ठुमकि-ठुमकि मयूरा नाचत, गीत कोयलिया गायो ।।

सजि आयो रे, ऋतु बसंत सजि आयो ।
अजी गाओ रे, ऋतु बसंत सजि आयो ।

पीली-पीली सरसों फूली, अरु बौर अमवा पे छायो ।
हरी-हरी मटर बिछौने ऊपर अमित रंग बरसायो ।

सजि आयो रे, ऋतु बसंत सजि आयो ।
अजी गाओ रे, ऋतु बसंत सजि आयो ।।

❑ उचित लय-ताल, के साथ गुट में गीत गवाएँ । मौसम के अनुसार होने वाले परिवर्तन पर चर्चा करें । कविता में आए गुन-गुन, बन-बन जैसे अन्य ध्वन्यात्मक शब्द बताने के लिए प्रेरित करें । अधोरेखांकित शब्दों के अर्थ शब्दकोश में देखने के लिए प्रोत्साहित करें ।

● सुनो, समझो और पढ़ो :

६. चंदा मामा की जय

– मंगल सक्सेना

जन्म : १९३६, बीकानेर (राजस्थान) **मृत्यु :** जुलाई २०१६ **रचनाएँ :** 'मैं तुम्हारा स्वर' आदि । **परिचय :** मंगल सक्सेना जी कवि, नाट्यनिर्देशक, राजस्थान साहित्य अकादमी के सचिव के रूप में प्रसिद्ध थे । आपने हिंदी साहित्य निर्मिति में अच्छा योगदान दिया है ।
प्रस्तुत एकांकी में लेखक ने शांति-प्रियता, बड़ों का आदर, छोटों से प्यार, बुरी आदतों को त्यागने के लिए प्रोत्साहित किया है ।

जरा सोचो .... चर्चा करो

यदि तुम्हारा घर मंगल ग्रह पर होता तो ....

पात्र

सुनील–आयु ८ वर्ष, **अनिल**–आयु ५ वर्ष, **चार बच्चे**–प्रत्येक की आयु ३ से ५ वर्ष,
रातरानी–आयु १३ वर्ष, **नींदपरी**–आयु ११ वर्ष, **चंदा मामा**–आयु १४ वर्ष,
दो तारे–आयु प्रत्येक ९ वर्ष, **तीन पहरेदार**–आयु १०-१२ वर्ष
समय : अर्धरात्रि । **स्थान :** बादलों के देश में ।

[रातरानी काली पोशाक में बैठी है । सामने टेबल पर हथौड़ी है । पीछे सेविका पंखा झल रही है । नींद परी के दोनों ओर एक-एक तारा खड़ा है । उनके हाथ में तारे की झंडी है । एक ओर नींदपरी हल्की नीली पोशाक, ढीली-ढाली बाँहोंवाला लंबा चोंगा पहने खड़ी है । वहीं पाँच बच्चे एक ही बेंच पर उनींदे-से बैठे हैं । सबसे छोटा बच्चा ऊँघ रहा है । सुनील अलग कुर्सी पर बैठा है ।]

(पर्दा उठता है ।)

नींदपरी : ये रोने वाले बच्चे हैं, विशेषकर यह अनिल । खड़े हो जाओ । **(अनिल खड़ा हो जाता है)**

रातरानी : **(डाँटकर)** तुम क्यों रोते हो ? **(अनिल और जोर से रोने लगता है । सभी जोर से रोने लगते हैं ।)** अरे, चुप हो जाओ ! नींदपरी इन्हें किसी तरह चुप कराओ ताकि कार्यवाही चालू की जाए ।

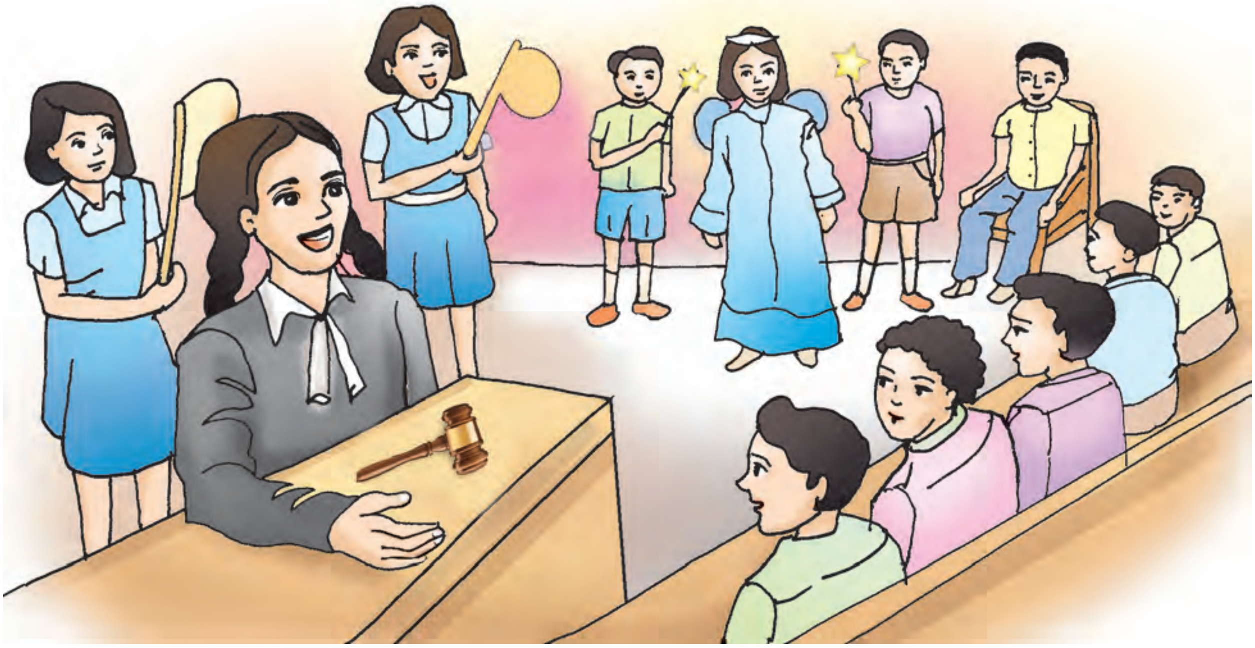

❑ एकांकी का मुखर वाचन कराएँ । नाट्यीकरण कराएँ । विद्यार्थी अपनी माँ की कौन-कौन-सी बातें मानते हैं उनसे उनकी सूची बनवाएँ । उन्हें अपनी रुचि का काम बताने के लिए कहें । किसी कार्य की परख करते हुए उसे करने या न करने का निर्णय लेने के लिए प्रेरित करें ।

वाचन जगत से

भारतीय मूल की किसी महिला अंतरिक्ष यात्री संबंधी जानकारी पढ़ो तथा विश्व के अंतरिक्ष यात्रियों के नाम बताओ ।

नींदपरी : और यह सुनील ... यह घर में चाय की कप-प्लेटें तोड़कर और अपनी माँ से पिटकर सोया था ।

रातरानी : इन्हें अपराध के अनुसार दंड देंगे । **(सुनील से)** तुम्हें सफाई देनी होगी । समझे, नहीं तो सजा दी जाएगी ।

नींदपरी : यह अपनी माँ का कहना नहीं मानता । खाने के समय खाना नहीं खाता । यह खेलने के समय खेलता नहीं, पढ़ने के समय पढ़ता नहीं, कोई काम समय पर नहीं करता ।

रातरानी : जवाब दो ।

सुनील : **(भोलेपन से)** अच्छे बच्चे बड़ों को जवाब नहीं देते इसलिए मैं जवाब नहीं दूँगा ।

नींदपरी : यह बड़ों को ''तू'' कहता है, उनका आदर नहीं करता । दूसरों को पीटता है ।

सुनील : अच्छा, मैंने आपको ''तू'' कहा क्या ? मैंने आपको पीटा क्या ? यह तो झूठ-मूठ कहती है ।

रातरानी : देखो तुमने इन्हें ''कहती है'' कहा है, जबकि तुम्हें कहना चाहिए था- ''कहती हैं'' । **(गुस्से से)** तुम बड़ों का मजाक उड़ाते हो । हम तुम्हें कड़ी से कड़ी सजा देंगे । **(तभी अनिल रो पड़ता है । सब बच्चे चौंककर उधर देखते हैं और सभी गला फाड़कर रो पड़ते हैं ।)** क्यों रोते हो ? **(चिल्लाकर)** चुप रहो, वरना ...... **(रातरानी गुस्से से काँपने लगती हैं ।)**

अनिल : सुनील भैया को कड़ी सजा मत दो ! **(रोने लगता है । उसके साथ सब रोने लगते हैं ।)**

रातरानी : अच्छा-अच्छा... कड़ी सजा नहीं देंगे, चुप तो हो जाओ ! अनिल तुम सबसे अधिक रोते हो । क्यों ?

अनिल : रोने से खाने को लड्डू मिलते हैं । **(सब हँस पड़ते हैं ।)**

रातरानी : हम तुम्हारी माँ को कहेंगी कि रोने पर तुम्हें डाँटा करें, तुम्हारी बात न माना करें - तब ?

अनिल : तब ....तब मैं और जोर-जोर से रोऊँगा ।

सुनील : रोने से हमको बताशे मिलते हैं इसलिए हम रोते हैं ।

रातरानी : यह बुरी बात है । हमेशा तुम्हें रोने पर बताशे नहीं मिलेंगे ।

सुनील : **(रुआँसा होकर)** आप क्षमा करें । मैं अब कभी कोई शैतानी नहीं करूँगा ।

❑ अकड़ना, डाँटना, चौंकना, शरमाना आदि क्रियाओं का विद्यार्थियों से मूक एवं मुखर अभिनय करवाएँ । उनसे इन क्रियाओं का वाक्यों में प्रयोग करवाएँ । एकांकी में आए कारक चिह्न खोजवाकर लिखवाएँ । उनका सार्थक वाक्यों में प्रयोग करने के लिए कहें ।

खोजबीन

इस वर्ष का सूर्यग्रहण कब है ? उस समय पशु-पक्षी के वर्तन-परिवर्तन का निरीक्षण करो और बताओ ।

भूगोल सातवीं कक्षा पृष्ठ ७

अनिल : हम कभी नहीं रोएँगे परंतु सुनील भैया को सजा न दी जाए । इन्हें सजा मत दें ।

रातरानी : **(हथौड़ी पीटकर)** शांति-शांति ! शोर मत करो । **(इतने में चंदामामा आते हैं ।)**

नींदपरी : चंदामामा आप ?

रातरानी : चंदामामा ! **(खड़ी हो जाती है, सब खड़े हो जाते हैं ।)**

सब बच्चे : **(खुशी से तालियाँ पीटकर)** चंदा मामा आ गए ... ! चंदा मामा आ गए ...! चंदा मामा, जयहिंद !

चंदा मामा : जयहिंद , मेरे बच्चो, जयहिंद ! **(रातरानी से)** .... रातरानी, तुम बच्चों पर अन्याय कर रही हो ।

रातरानी : **(डरकर)** कैसा अन्याय मामा जी ?

चंदा मामा : एक व्यक्ति में अगर गुण अधिक हों और बुरी आदतें कम तो उसे क्षमा कर दिया जाता है ।

रातरानी : **(क्रोध से)** नींदपरी , तुमने हमें इनके गुण नहीं बताए, क्यों ?

चंदा मामा : यही तो बुरी बात है । किसी की बुराई के साथ-साथ उसकी अच्छाई को भी ढूँढ़ना चाहिए । यह सुनील अपने से छोटे बच्चों को कभी नहीं पीटता, उन्हें प्यार करता है । ये बच्चे अपने से बड़ों का कहना मानते हैं, उन्हें प्यार करते हैं, उनका आदर करते हैं । आपस में भी कभी नहीं झगड़ते ।

रातरानी : सचमुच ! इनके ये गुण तो मैं अभी-अभी देख चुकी हूँ ।

नींदपरी : रातरानी, ऐसे गुणवाले बच्चों को तो हमारे यहाँ सजा नहीं दी जाती ।

रातरानी : अगर ये बच्चे प्रतिज्ञा करें कि ये बुरी आदतें भी छोड़ देंगे तो इन्हें सजा नहीं दी जाएगी ।

सब बच्चे : हम प्रतिज्ञा करते हैं कि हम छोटी-बड़ी सभी बुरी आदतें छोड़ देंगे ।

रातरानी : सबको क्षमा किया जाता है । **(बच्चे खुशी से 'चंदा मामा की जय,' चंदा मामा की जय-जयकार करने लगते हैं ।)**

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

सेविका = सेवा करने वाली
कड़ी = कठोर
मजाक = हँसी-ठट्ठा
शैतानी = शरारत

मुहावरा

गला फाड़कर रोना = जोर-जोर-से रोना

स्वयं अध्ययन

सौरमंडल की जानकारी पर लघु टिप्पणी तैयार करो और बताओ ।

- ग्रहों का क्रम
- उपग्रहों की संख्या
- पृथ्वी का परिक्रमा काल

मेरी कलम से

किसी दुकानदार और ग्राहक के बीच होने वाला संवाद लिखो और सुनाओ : जैसे– माँ और सब्जीवाली ।

विचार मंथन

।। बिन माँगे मोती मिले।।

सदैव ध्यान में रखो

निवेदन सदैव विनम्र शब्दों में ही करना चाहिए ।

१. किसने, किससे और क्यों कहा है ?

(क) ‘‘हम तुम्हें कड़ी से कड़ी सजा देंगे ।’’

(ख) ‘‘सबको क्षमा किया जाता है ।’’

२. इस एकांकी का सारांश अपने शब्दों में लिखो ।

३. इस एकांकी के पसंदीदा पात्र का वर्णन करो ।

४. नैतिक मूल्यों की सूची बनाओ और उनपर अमल करो ।

भाषा की ओर

निम्नलिखित वाक्य पढ़ो और मोटे और ( ) में छपे शब्दों पर ध्यान दो :

१. सर्वेश ने परिश्रम किया **और** इस परिश्रम ने उसे सफल बना दिया ।

२. मैं कर्ज में डूबा था **परंतु** मुझे असंतोष न था ।

३. प्रगति पत्र पर माता जी **अथवा** पिता जी के हस्ताक्षर लेकर आओ ।

४. मैं लगातार चलता **तो** मंजिल पा लेता ।

५. मुझे सौ–सौ के नोट देने पड़े **क्योंकि** दुकानदार के पास दो हजार के नोट के छुट्टे नहीं थे ।

उपर्युक्त वाक्यों में **और, परंतु, अथवा, तो, क्योंकि ....** शब्द अलग–अलग स्वतंत्र वाक्यों या शब्दों को जोड़ते हैं । ये शब्द **समुच्चयबोधक अव्यय** हैं ।

१. (वाह !) क्या रंग–बिरंगी छटा है ।

३. (अरे रे !) पेड़ गिर पड़ा ।

२. (अरे !) हम कहाँ आ गए ?

४. (छिः!) तुम झूठ बोलते हो ।

५. (शाबाश !) इसी तरह साफ–सुथरा आया करो ।

उपर्युक्त वाक्यों में **वाह, अरे, अरे रे, छिः, शाबाश** ये शब्द क्रमशः खुशी, आश्चर्य, दुख, घृणा, प्रशंसा के भाव दिखाते हैं । ये शब्द **विस्मयादिबोधक अव्यय** हैं ।

● सुनो, समझो और पढ़ो :

७. रहस्य

–हरिकृष्ण देवसरे

जन्म : १९४०, नागोद (म.प्र.) **मृत्यु :** १४ नवंबर २०१३ **रचनाएँ :** संपूर्ण बाल विज्ञान कथाएँ आदि । **परिचय :** डॉ. हरिकृष्ण देवसरे जी ने बालसाहित्य रचना और समीक्षा के क्षेत्र में प्रशंसनीय योगदान दिया है । आपने अनेक पुस्तकों का संपादन कार्य भी किया है ।

प्रस्तुत कहानी के माध्यम से लेखक ने बच्चों को अंधविश्वासों से दूर रहते हुए वैज्ञानिक दृष्टिकोण को अपनाने के लिए प्रेरित किया है ।

स्वयं अध्ययन

हिंदी-मराठी के समानार्थी मुहावरे और कहावतें सुनो और उनका द्विभाषी लघुकोश बनाओ :
जैसे- अधजल गगरी छलकत जाए = उथळ पाण्याला खळखळाट फार.

अँधेरी रात थी । चारों ओर सन्नाटा था । हाथ फैलाए न सूझता था । कभी-कभी कुत्तों के भौंकने की आवाज सुनाई पड़ती थी । आधी रात बीत चुकी थी । मामा जी के घर से कुछ दूरी पर सामने हवेली थी । हवेली में उजाला था । आर्यन खेतों को सरपट पार करता हुआ उस ओर अकेले बढ़ रहा था । उस हवेली में आधी रात के बाद कल भी ऐसा ही उजाला देखा था। मामा जी ने पहले ही आर्यन से कह दिया था, 'उधर हवेली की ओर जाने की जरूरत नहीं है ।' वह हवेली भूतों का डेरा है। आर्यन मन-ही-मन मुसकाने लगा । वह जानता था कि भूत-वूत कुछ नहीं होते । यह कपोल कल्पना है । कक्षा में विज्ञान के शिक्षक ने वैज्ञानिक दृष्टिकोण अच्छी तरह समझाया था । रहस्य का पता लगाने के लिए उसने मन में ठान लिया ।

मामा जी ने कहा था, 'इस हवेली में पिछले दस-पंद्रह सालों से कोई नहीं रहता । पहले उसमें एक जमींदार का परिवार रहता था । अब जमींदार का परिवार खत्म हो गया है । उस तरफ कोई आता-जाता नहीं । एक बार घीसू उधर गया था । बेचारे का बुरा हाल हुआ था । तीन महीने तक खाट पकड़े रहा ।'

आर्यन करवटें बदलता रहा । आधी रात को उठकर छत से उसने हवेली को फिर से देखा । वहाँ रोशनी थी । गरमी की छुट्टियाँ बिताने के लिए वह मामा जी के घर आया था। यह एक समृद्ध गाँव है । मामा जी के पास एक विदेशी डिजिटल कैमरा भी है, यह बात आर्यन को मालूम थी । मामा जी की एक लड़की थी । उसका नाम था कनिष्का। आर्यन ने कनिष्का से कुछ सलाह-मशविरा किया । दोनों बहादुर थे । अगला कदम उठाने के लिए उन्होंने कमर कस ली ।

अगली सुबह उसने मामा जी से कैमरा माँग लिया । मामी जी को साथ बैठाकर मामा जी का फोटो लिया । फिर मामा-मामी और कनिष्का के भी फोटो खींचे । कनिष्का ने मामा-मामी के साथ आर्यन के भी फोटो खींचे । मामा-मामी जी बहुत खुश थे । मामा जी ने कैमरे की तारीफ के पुल बाँधते हुए कहा, ''रात में,

❑ कहानी के किसी एक परिच्छेद का आदर्श वाचन करें । विद्यार्थियों से मौन वाचन कराएँ । प्रश्नोत्तर एवं चर्चा के माध्यम से कहानी के प्रमुख मुद्दे बताने के लिए कहें । कहानी अपने शब्दों में कहने के लिए प्रोत्साहित करें । ब्लॉग से किसी कहानी का वाचन कराएँ ।

बताओ तो सही

अंधश्रद्‌धा निर्मूलन संबंधी स्वयं किए हुए कार्य बताओ ।

(घर में) (विद्‌यालय में) (परिवेश में)

मामूली रोशनी में, बिना फ्लैशगन के भी यह तसवीर खींच लेता है । कमाल का लैंस लगा है इसमें ।'' आर्यन ने कैमरा अपने पास रख लिया था । कैमरा पाकर आर्यन और कनिष्का बहुत प्रसन्न थे । वे दोनों रात होने का इंतजार करने लगे। रहस्य का पता लगाने का यह अच्छा अवसर था ।

अँधेरा होते ही दोनों घर से निकल पड़े । हवेली सामने थी । अंदर से हँसी और कहकहों की आवाजें सुनाई पड़ रही थीं । आर्यन और कनिष्का ने पहले चारों ओर ध्यान से देखा । कहीं कोई खतरा नहीं था । वे दबे पाँव हवेली में चले गए । बीचोंबीच एक बड़ा कमरा था । उसका दरवाजा अंदर से बंद था । खिड़कियाँ नीचे से बंद थीं लेकिन ऊपर से खुली थीं ।

बड़ी सावधानी से आर्यन ने अंदर झाँककर देखा । हट्टे-कट्टे, मोटे-तगड़े, बड़ी-बड़ी मूँछोंवाले कई लोग पगड़ी बाँधे बैठे थे । उनके साथ कमीज और पैंट पहने हुए भी कुछ लोग थे । उनकी आँखों से आग बरस रही थी । आँखें लाल-लाल थीं । सबके चेहरे डरावने थे । उस समय वे खाने में मस्त थे । कोई हड्‌डी चबा रहा था तो कोई रोटियाँ तोड़-तोड़कर मुँह में डाल रहा था । आर्यन ने उन्हें ध्यान से देखा । उनके गले में कारतूसों की पेटी लटक रही थी । बंदूकें और तलवारें भी रखी थीं । कुछ लोग लुढ़के हुए पड़े थे ।

आर्यन ने इशारा किया । कनिष्का ने बड़ी सावधानी से कैमरा निकाला । गैस बत्तियों की रोशनी इतनी तेज थी कि बड़ी आसानी से फोटो लिया जा सकता था । बस, उसने फटाफट कई फोटो खींचे और वे घर की ओर चल पड़े । अगले दिन सवेरे-सवेरे आर्यन ने साइकिल उठाई और नारायणपुर की ओर चल पड़ा । वहाँ फोटोग्राफर की एक दुकान थी । सभी फोटो तैयार कराकर शाम तक वह लौट आया ।

कनिष्का ने अपने पिता जी से कहा, ''आप कहते हैं, भूतों के पैर उलटे होते हैं । उनकी छाया नहीं होती । उनके फोटो नहीं ले सकते लेकिन कल रात हम भूतों के डेरे पर गए थे । वहाँ कुछ फोटो लिए हैं । जरा देखिए तो !'' उन्होंने फोटो पिता जी को दे दिए ।

वे परेशान हो उठे । उन्हें ऐसा खतरनाक काम पसंद न था । फोटो देखकर उनकी आँखें खुली की खुली रहीं । बोले, ''तो क्या भूत इनसानों जैसे होते हैं ?''

''इनसानों जैसे नहीं । इनसान ही भूत हैं । देखिए न ! इनके पैर सीधे हैं, इनकी छाया भी है और इनका फोटो भी आ गया । असल में भूत-वूत की अफवाह हैं । कोई हवेली की तरफ न जाए, उनका रहस्य न खुले इसीलिए उन्होंने भूत होने की अफवाह फैलाई है । यदि लोगों का आना-जाना रहता तो ये लोग वहाँ अपना क्रिया-कलाप कैसे चलाते ?'' फिर कुछ रुककर बोला, ''आप मेरे साथ थाने चलेंगे ? मुझे इस मामले में बहुत गड़बड़ लगती है'', आर्यन ने कहा ।

❑ विद्‌यार्थियों से कहानी पर आधारित प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने के लिए प्रश्ननिर्मिति कराएँ । उन्हें बनाए गए प्रश्नों के उत्तर एक-दूसरे से पूछने के लिए प्रेरित करें । उन्हें विज्ञान प्रश्नमंच में सहभागी होने के लिए कहें । प्रश्ननिर्मिति की स्पर्धा का आयोजन करें ।

विचार मंथन

।। श्रद्‌धा और विज्ञान, जीवन के दो पक्ष महान ।।

थानेदार ने फोटो देखते ही कहा, ''इन डाकुओं के गिरोह ने कई वर्षों से बहुत ही उत्पात मचा रखा है । डकैती- राहजनी इनका पेशा है । कई वर्षों से इनकी तलाश की जा रही है । इनको पकड़ने के लिए पुलिस ने अपना खून-पसीना एक कर दिया था । शाबाश ! तुम दोनों ने बहुत ही बहादुरी का काम किया है । कहाँ हैं ये ?'' ''आप तैयारी कीजिए, ठिकाना मैं बताता हूँ ।'' आर्यन ने कहा ।

उस रात भूतों के डेरे पर पुलिस ने छापा मारा । दोनों ओर से गोलियाँ चलीं । सवेरा होते-होते डाकुओं ने हथियार डाल दिए । उनके कुछ साथी मारे गए और कुछ पकड़े गए । गाँववालों ने हवेली में बसे भूतों को देखा तो चकित रह गए । सभी डाकुओं के आतंक से मुक्त हो गए । जिला कलेक्टर ने आर्यन और कनिष्का की बहादुरी के कारण उनके नाम राष्ट्रपति कार्यालय को भेजवा दिया । आने वाले गणतंत्र दिवस पर महामहिम राष्ट्रपति के हाथों उनको 'वीरता पुरस्कार' से सम्मानित किया जाने वाला है ।

मैंने समझा

वाचन जगत से

टिप्पणी बनाने हेतु समाचार पत्र से बहादुरी के किस्से पढ़ो और संकलन करो ।

शब्द वाटिका

नए शब्द

सन्नाटा = नीरव शांति
सलाह-मशविरा = परामर्श
बीचोंबीच = मध्यभाग में
उत्पात = ऊधम, उपद्रव
डकैती = लूट-पाट
राहजनी = रास्ते में लूट-पाट
आतंक = दहशत,भय

मुहावरे

खाट पकड़ना = बीमार होना
करवटें बदलना = बेचैन रहना
कमर कसना = दृढ़ संकल्प करना
तारीफ के पुल बाँधना = प्रशंसा करना
आँखें खुली की खुली रहना = चकित रह जाना
खून पसीना एक करना = कड़ी मेहनत करना
हथियार डालना = आत्मसमर्पण करना

❑ कहानी में आए वर्तमानकाल के किसी एक वाक्य का चुनाव कराके उसे भूतकाल एवं भविष्यकाल में परिवर्तित कराएँ । इसी तरह एक काल से अन्य कालों में वाक्य परिवर्तन का अभ्यास कराएँ । तीनों कालों की क्रिया रूपों पर चर्चा करके परिवर्तन कराएँ ।

सुनो तो जरा

पाठों में आए हुए मूल्यों को सुनो, तालिका बनाओ और सुनाओ ।

सदैव ध्यान में रखो

बड़ों की आज्ञा का पालन करना चाहिए ।

१. जोड़ियाँ मिलाओ :

(अ)	(ब)
(क) फोटो की दुकान	कपोल कल्पना
(ख) भूत-वूत	कहकहों की आवाज
(ग) हवेली	खतरनाक काम
	नारायणपुर

२. आर्यन और कनिष्का द्‌वारा देखी हुई हवेली का वर्णन अपने शब्दों में लिखो ।

३. कनिष्का और आर्यन को 'वीरता पुरस्कार' घोषित होने का कारण बताओ ।

४. इस कहानी की किसी घटना को संवाद रूप में प्रस्तुत करो ।

भाषा की ओर

चित्र के आधार पर सभी कारकों का प्रयोग करके वाक्य लिखो :

१. मछुआरे ने जाल फेंका ।

२. -------------------------------

३. -------------------------------

४. -------------------------------

५. -------------------------------

६. -------------------------------

७. -------------------------------

८. -------------------------------

● पढ़ो, समझो और गाओ :

८. हम चलते सीना तान के

-डॉ. हरिवंशराय बच्चन

जन्म : २७ नवंबर १९०७, इलाहाबाद (उ.प्र.) **मृत्यु :** १८ जनवरी २००३ **रचनाएँ :** मधुशाला, मधुकलश, निशा निमंत्रण, क्या भूलूँ क्या याद करूँ, दस द्वार से सोपान तक, नीड़ का निर्माण फिर आदि । **परिचय :** बच्चन जी हिंदी कविता में उत्तर छायावाद के प्रमुख कवि हैं ।
प्रस्तुत रचना के माध्यम से कवि ने समता, बंधुता, श्रम एवं देशप्रेम की भावना के महत्त्व को प्रतिपादित किया है ।

खोजबीन

भारत के सभी राज्यों की प्रमुख भाषाओं के नाम बताओ । उनसे संबंधित अधिक जानकारी पढ़ो ।

पुस्तकालय से | अंतरजाल से

धर्म अलग हों, जाति अलग हों, वर्ण अलग हों, भाषाएँ,
पर्वत, सागर तट, वन-मरुस्थल, मैदानों से हम आएँ,
फौजी वर्दी में हम सबसे पहले हिंदुस्तान के ।
भारतमाता के बेटे हम चलते सीना तान के ।

हिंदुस्तान कि जिसकी मिट्टी में हम खेले, खाए हैं,
जिसकी रजकण हमको ममता, समता से अपनाए हैं,
कर्ज चुकाने हैं हमको उन रजकण के एहसान के ।
भारतमाता के बेटे हम चलते सीना तान के ।

जिसकी पूजा में सदियों से श्रम के फूल चढ़ाए हैं,
जिसकी रक्षा में पुरखों ने अगणित शीश कटाए हैं,
हम रखवाले-पौरुषवाले उसके गौरव मान के ।
भारतमाता के बेटे हम चलते सीना तान के ।

❑ उचित हाव-भाव के साथ कविता का सामूहिक, साभिनय पाठ करवाएँ । प्रश्नोत्तर एवं चर्चा के माध्यम से कविता के भाव स्पष्ट करें । किसी सैनिक/ महत्वपूर्ण व्यक्ति का साक्षात्कार लेने के लिए प्रोत्साहित करें । अन्य प्रयाणगीत/अभियान गीतों का संग्रह करवाएँ ।

सुनो तो जरा

किसी शहीद और उसके परिवार के बारे में सुनो : मुद्दे – जन्म तिथि, गाँव, शिक्षा, घटना ।

हम गिर जाएँ किंतु न गिरने देंगे देश निशान को,
हम मिट जाएँ किंतु न मिटने देंगे हिंदुस्तान को,
हम सबसे आगे रहते अवसर पर बलिदान के ।
भारतमाता के बेटे हम चलते सीना तान के ।

जो वीरत्व–विवेक समर में हम सैनिक दिखलाएँगे,
उसकी गाथाएँ भारत के गाँव, नगर, घर गाएँगे,
अनगिन कंठों में गूँजेंगे बोल हमारे गान के ।
भारतमाता के बेटे हम चलते सीना तान के ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द
मरुस्थल = रेगिस्तान
रजकण = धूलिकण
एहसान = उपकार
पुरखे = पूर्वज
समर = युद्ध
मुहावरा
सीना तानकर चलना = गर्व से चलना

मेरी कलम से

शालेय प्रतिज्ञा का श्रुतलेखन करो और प्रतिज्ञा के मूल्यों का अपने व्यवहारों से सत्यापन करो ।

विचार मंथन

।। हम सब एक हैं ।।

अध्ययन कौशल

अब तक पढ़े हुए मुहावरों-कहावतों का वर्णक्रमानुसार संग्रह बनाओ और चर्चा करो ।

जरा सोचो ...... लिखो

यदि तुम सैनिक होते तो ......

सदैव ध्यान में रखो

मानव सेवा ही सच्ची सेवा है ।

१. निम्न पंक्तियों का अर्थ लिखो :

(क) हिंदुस्तान -------------------- तान के ।

(ख) जो वीरत्व -------------------- तान के ।

२. पसंदीदा विषय पर चार पंक्तियों की कविता लिखो ।

३. इस कविता का केंद्रीय भाव अपने शब्दों में स्पष्ट करो ।

४. अपने देश के राष्ट्रीय प्रतीकों के नाम बताओ ।

भाषा की ओर

अर्थ के आधार पर वाक्य पढ़ो, समझो और उचित स्थान पर लिखो :

१. बच्चे हँसते-हँसते खेल रहे थे ।

२. माला घर नहीं जाएगी ।

३. इसे हिमालय क्यों कहते हैं ?

४. सदैव सत्य के पथ पर चलो ।

५. वाह ! क्या बनावट है ताजमहल की !

६. कश्मीर का सौंदर्य देखकर तुम्हें आश्चर्य होगा ।

७. खूब पढ़ो खूब बढ़ो ।

८. यदि बिजली आएगी तो रोशनी होगी ।

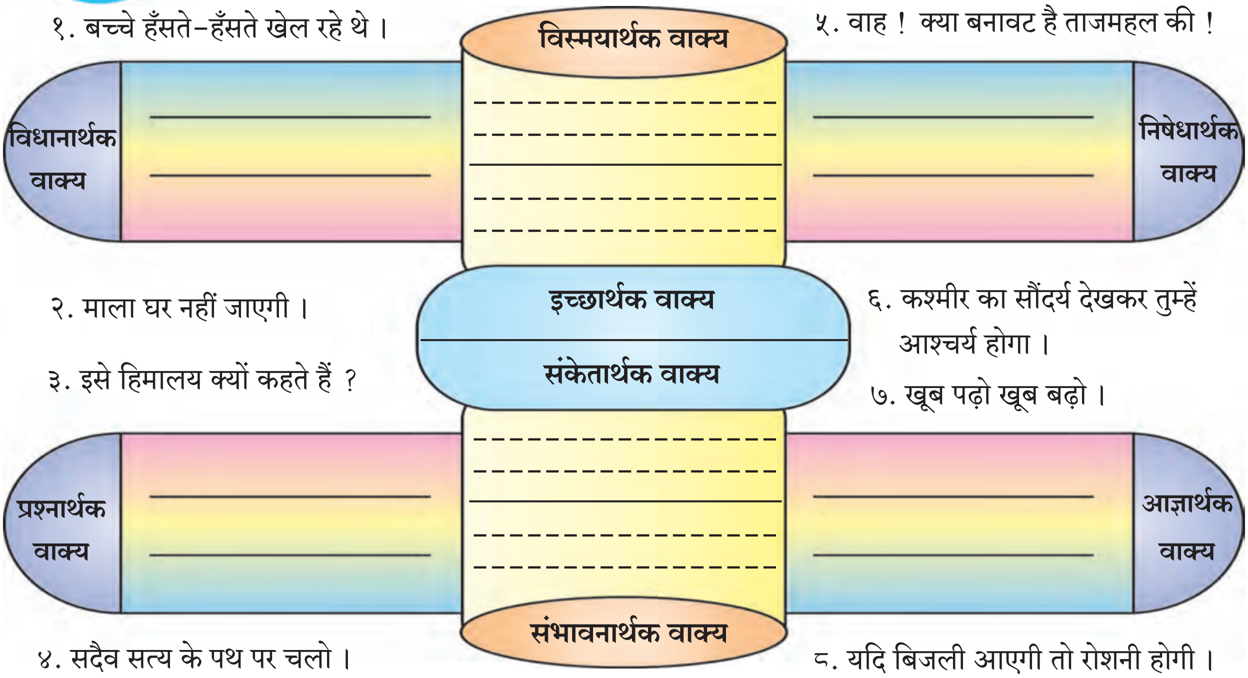

पहले वाक्य में क्रिया के करने या होने की सामान्य सूचना मिलती है । अतः यह वाक्य **विधानार्थक वाक्य** है । दूसरे वाक्य में आने का अभाव सूचित होता है क्योंकि इसमें **नहीं** का प्रयोग हुआ है । अतः यह **निषेधार्थक वाक्य** है । तीसरे वाक्य में प्रश्न पूछने का बोध होता है । इसके लिए **क्यों** का प्रयोग हुआ है । अतः यह **प्रश्नार्थक वाक्य** है । चौथे वाक्य में आदेश दिया है । इसके लिए **चलो** शब्द का प्रयोग हुआ है । अतः यह **आज्ञार्थक वाक्य** है । पाँचवें वाक्य में विस्मय-आश्चर्य का भाव प्रकट हुआ है । इसके लिए **वाह** शब्द का प्रयोग हुआ है । अतः यह **विस्मयार्थक वाक्य** है । छठे वाक्य में संदेह या संभावना व्यक्त की गई है । इसके लिए **होगा** शब्द का प्रयोग हुआ है । अतः यह **संभावनार्थक वाक्य** है । सातवें वाक्य में इच्छा या आशीर्वाद व्यक्त किया गया है । इसके लिए **खूब पढ़ो, खूब बढ़ो** का प्रयोग हुआ है । अतः यह **इच्छार्थक वाक्य** है । आठवें वाक्य में एक क्रिया का दूसरी क्रिया पर निर्भर होने का बोध होता है । इसके लिए **बिजली, रोशनी** शब्दों का प्रयोग हुआ है । अतः यह **संकेतार्थक वाक्य** है ।

अभ्यास-२

१. 'यातायात सप्ताह' तथा 'क्रीड़ा सप्ताह' पर पोस्टर बनाओ और कक्षा में प्रदर्शनी लगाओ। (सामग्री- चित्र, चार्ट पेपर, समाचार पत्र, पत्रिका की कतरनें/ उद्‌घोष आदि ।)

२. दिए गए शब्द कार्ड देखो पढ़ो और उनकी सहायता से सरल, मिश्र तथा संयुक्त वाक्य बनाकर कक्षा में सुनाओ। (एक शब्द कार्ड का प्रयोग अनेक बार कर सकते हैं ।)

रहा	घर	यह	सड़क	पानी	और
राष्ट्रीय	बाईं	उदाहरण	का	बरसना	के
ओर	वहीं	दाईं	भारत	जी	है
एकात्मता	हैं	कुआँ	उत्तम	देश	की

३. 'रमेश पुस्तक पढ़ता है।' इस वाक्य को सभी काल में परिवर्तित करके भेदों सहित बताओ और लिखो।

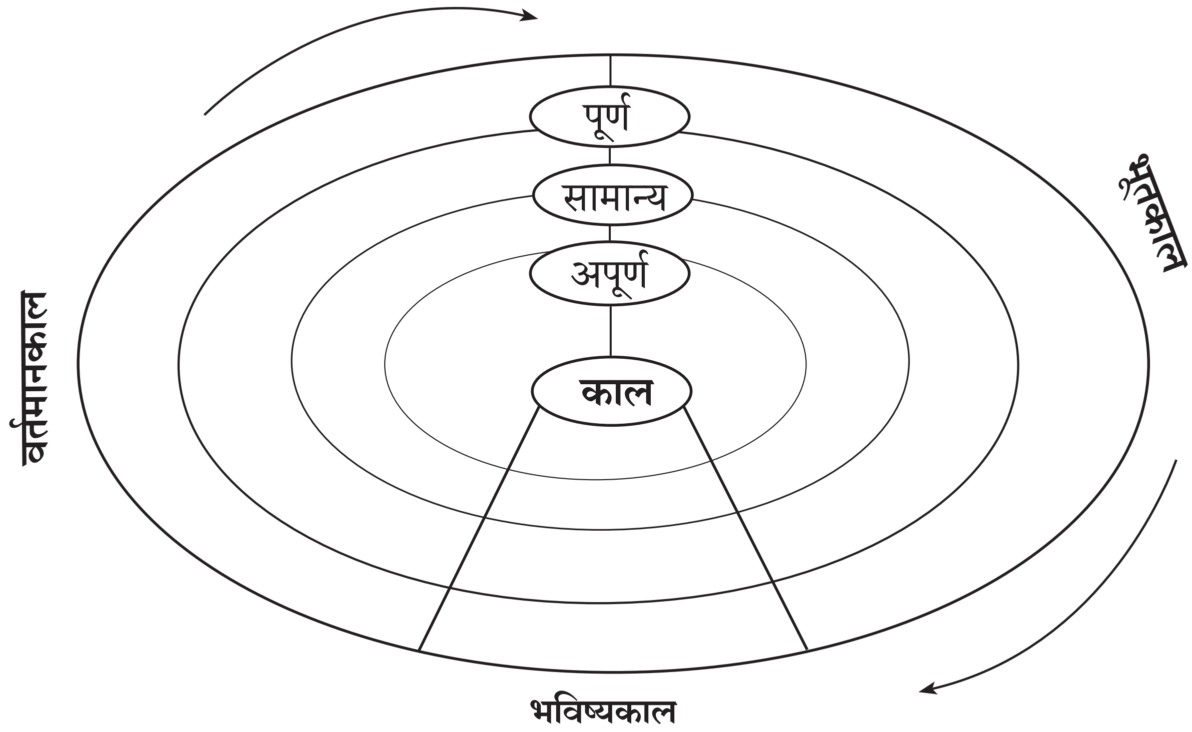

४. अपने आसपास दिखाई देने वाले सांकेतिक चिह्नों के चित्र बनाओ और उन्हें नामांकित करो।

अभ्यास – ३

✻ चित्रकथा : चित्रवाचन करके अपने शब्दों में कहानी लिखो और उचित शीर्षक बताओ । अंतिम चित्र में दोनों ने एक–दूसरे से क्या कहा होगा ? लिखो :

❑ विद्‌यार्थियों से चित्रों का निरीक्षण कराएँ । चित्र में कौन–कौन–सी घटनाएँ घटी होंगी, उन्हें सोचने के लिए कहें । उन्हें अन्य चित्रों एवं घटनाओं के आधार पर कहानी का आधुनिकीकरण करके लिखने के लिए प्रेरित करें और उचित शीर्षक देने के लिए कहें ।

पुनरावर्तन – २

१. निम्नलिखित शब्दों में कौन–से पंचमाक्षर छिपे हुए हैं, सोचो और लिखो :

शब्द	पंचमाक्षर	उसी वर्ग के अन्य शब्द
पंकज	---------	--------, --------
चंचल	---------	--------, --------
ठंडा	---------	--------, --------
संत	---------	--------, --------
पेरांबूर	---------	--------, --------
पंछी	---------	--------, --------
बंदरगाह	---------	--------, --------
उमंग	---------	--------, --------

२. पाठ्यपुस्तक में आए संयुक्ताक्षरयुक्त तीन–तीन शब्द ढूँढ़ो । उनके संयुक्ताक्षर बनने के प्रकारानुसार वर्गीकरण करो । उन शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग करो ।

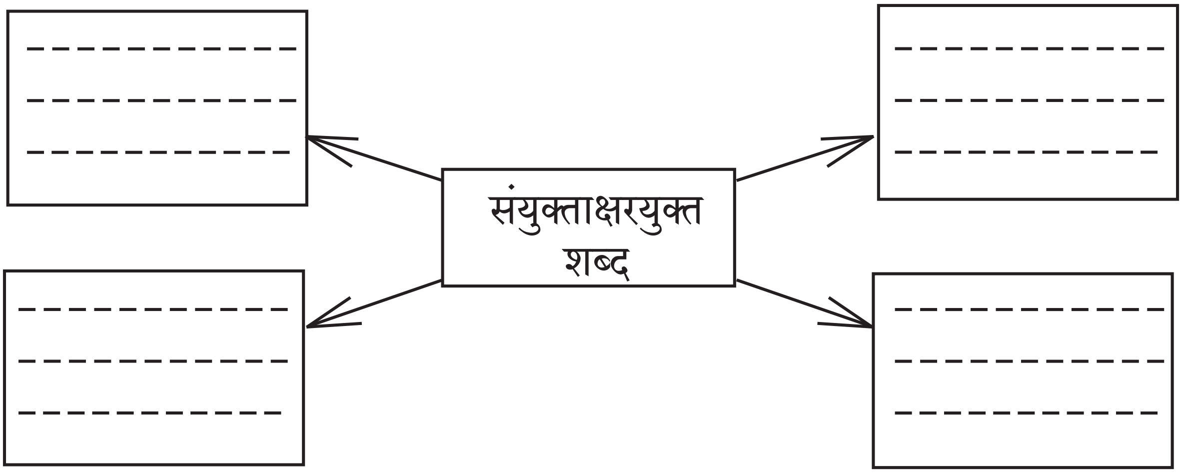

उपक्रम

प्रतिदिन किसी अपठित गद्यांश पर आधारित ऐसे चार प्रश्न तैयार करो, जिनके उत्तर एक–एक वाक्य में हों ।

उपक्रम

प्रतिसप्ताह विद्यालय की विशेष उल्लेखनीय घटना सूचना पट्ट पर लिखो ।

उपक्रम

प्रत्येक सत्र में ग्राफिक्स, वर्ड आर्ट आदि की सहायता से एक–एक विषय पर विज्ञापन बनाओ ।

प्रकल्प

हिंदी की महिला कवयित्री संबंधी जानकारी पर आधारित व्यक्तिगत अथवा गुट में प्रकल्प तैयार करो ।

अध्ययन कौशल	१. संदर्भ स्रोतों से प्राप्त जानकारी का संकलन, वर्गीकरण और मुद्दे, सारांश, टिप्पणी तैयार करना । २. उपलब्ध चित्र, आकृति को नामांकित करते हुए शीर्षक देना । ३. दैनिक कार्य का नियोजन एवं व्यवहार में प्रयोग तथा मुहावरे, कहावतें, नए शब्दों का वर्णक्रमानुसार संग्रह बनाना । ४. स्वयं के लिए आवश्यक जानकारी, चित्र, वीडियो क्लिप्स, फिल्म्स आदि अंतरजाल पर खोजना । ५. विविध स्वरूपों के डिजिटल साहित्य के प्रयोग की जानकारी रखना । (ई-बुक्स, ऑडियो बुक्स, इंटरएक्टिव साहित्य, भाषिक खेल आदि ।) ६. संकेत स्थलों की संरचना को समझते हुए उसमें निहित विविध संदर्भों का यथायोग्य उपयोग करना । ७. संगणकीय शिष्टाचार का पालन करना । जैसे : दूसरों का पासवर्ड न देखना आदि ।
भाषा अध्ययन	१. पुनरावर्तन-अ से ऑ और क, च, ट, त, प वर्ग के आधार पर वर्णमाला, मात्रा, संयुक्ताक्षर, पंचमाक्षर आदि । २. समानार्थी, विरुद्धार्थी, शब्दयुग्म, उपसर्ग, प्रत्यय, लिंग-वचन परिवर्तन और प्रयोग, विकारी शब्द । ३. अविकारी शब्द (भेदसहित), काल पहचानना (भेदसहित), कारक परिचय, प्रयोग, वाक्य भेद (अर्थ के अनुसार), वाक्य उद्देश्य और विधेय । ४. (अ) विरामचिह्न ( ) [ ] { } ^ (ब) शुद्ध उच्चारण प्रयोग (कोष-कोश-कोस) । ५. (अ) हिंदी सम्मोच्चारित भिन्नार्थक शब्द (ब) मुहावरों-कहावतों का प्रयोग के माध्यम से परिचय ।

शिक्षकों के लिए मार्गदर्शक बातें ....

अध्ययन-अनुभव देने से पहले पाठ्यपुस्तक में दिए गए अध्यापन संकेतों, दिशा-निर्देशों को अच्छी तरह समझ लें । सभी कृतियों का विद्यार्थियों से अभ्यास करवाएँ । इलेक्ट्रॉनिक संदर्भों (अंतरजाल, गूगल, संकेतस्थल आदि) में आप सबका विशेष सहयोग नितांत आवश्यक है । भाषा अध्ययन के लिए अधिक-से-अधिक पुस्तक एवं अन्य उदाहरणों द्वारा अभ्यास कराएँ । व्याकरण पारंपरिक रूप से नहीं पढ़ाना है । कृतियों और उदाहरणों के द्वारा संकल्पना तक ले जाकर विद्यार्थियों को पढ़ाना है ।

पूरक पठन सामग्री कहीं पाठ को पोषित करती है और कहीं उनके पठन संस्कृति को बढ़ावा देती हुई रुचि पैदा करती है । अतः पूरक पठन आवश्यक रूप से करवाएँ ।

दैनिक जीवन से जोड़ते हुए भाषा और स्वाध्यायों के सहसंबंधों को स्थापित किया गया है । आवश्यकतानुसार पाठ्येतर कृतियों, खेलों, संदर्भों, प्रसंगों का भी समावेश अपेक्षित है । आप सब पाठ्यपुस्तक के माध्यम से जीवन मूल्यों, जीवन कौशलों, मूलभूत तत्वों के विकास के अवसर विद्यार्थियों को प्रदान करें । क्षमता विधान एवं पाठ्यपुस्तक में अंतर्निहित सभी क्षमताओं/कौशलों, स्वाध्यायों का 'सतत सर्वंकष मूल्यमापन' अपेक्षित है ।

आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि शिक्षक, अभिभावक, सभी इस पुस्तक का सहर्ष स्वागत करेंगे ।

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे.

हिंदी सुलभभारती इयत्ता ७ वी

₹ 28.00